साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्द

चरण १३: २०१६–१७

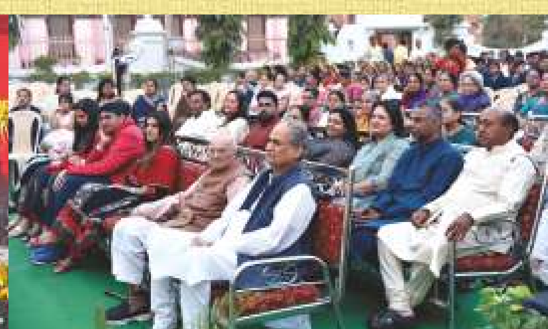

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:

शिकोहाबाद: दीपक औहरी – 9759213018, मोहित जादोंन – 9358361489

शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141

ई–मेल: shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १३: २०१६-१७

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
(कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी)

श्री उदय प्रताप सिंह
(पूर्व सांसद व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री उमाशंकर शर्मा

श्री मंज़र-उल वासै

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

डॉ. चंद्रवीर जैन

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

श्रीमती सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 03

साहित्यिक कार्यक्रम

ग्यारहवां ग्रामीण कवि सम्मेलन 05

एकल काव्य पाठ 10

विचार गोष्ठी '21वीं सदी में मुक्तिबोध की कविता' (स्थापना दिवस) 11

सांस्कृतिक कार्यक्रम

नृत्य-संगीत

स्पिक मैके एवं शब्दम् रीजनल कन्वेन्शन–2017 16

कथक कार्यशाला एवं नृत्य 17

संतूर वादन 18

भक्ति संगीत 19

देशप्रेम गीत/कविता प्रतियोगिता 20

शिक्षा-जगत

शिक्षक सम्मान समारोह 21

छात्र सम्मान समारोह 24

प्रश्नमंच 26

स्त्री सशक्तिकरण

ग्रीष्मकालीन शिविर 29

राखी मिलन समारोह 31

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र 32

जानकीदेवी बालिका–महिला पाठशाला 35

जानकीदेवी बजाज १२५वीं जयन्ती समारोह

वर्धा 36

शिकोहाबाद 38

एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई 40

25वां जानकीदेवी बजाज पुरस्कार 42

विविधा

'होली में क्या करें, क्या ना करें' 47

विचार गोष्ठी

रामनवमी शोभायात्रा 48

कुँवर नारायण को याद करते हुए 49

पुस्तक चर्चा/सम्मान 52

अध्यक्षीय निवेदन

'साहित्य एक शाब्दिक कला है,भाषा से अनिवार्यतः जुड़ी हुई। वह सामाजिक चेतना को सीधे संबोधित करती है, किसी अन्य विषय की भाषा और व्याख्या के मार्फत नहीं। वह जीवन की भाषा है–सच्ची और बेबाक' – कुँवर नारायण

हिन्दी के समर्थ सर्जक, ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी एवं पद्मभूषण सम्मानों से सम्मानित कवि कुँवर नारायण का विगत 15 नवम्बर 2017 को निधन हो गया। शब्दम् परिवार उनके निधन पर गहन एव मार्मिक शोक संवेदना प्रकट करता है। उनके ऊपर एक संक्षिप्त परिचयात्मक आलेख इस अंक में हम दे रहे हैं।

हिन्दी कविता के समर्थ और बड़े कवि 'गजानन माधव मुक्तिबोध' की जन्मशताब्दी वर्ष में शब्दम् के स्थापना दिवस पर हमने सोचा –क्यों न मुक्तिबोध की कविता पर विचार विमर्श किया जाय ! इक्कीसवीं सदी में आखिर मुक्तिबोध की कविता की सार्थकता क्या है? मुक्तिबोध अपने समय की, मानवीय सभ्यता की गहन समीक्षा करते हैं। इस संगोष्ठी की विस्तृत विवरण आप इस अंक में पढ़ेंगे।

हम हिन्दी के साथ–साथ उसकी बोलियों के विकास और संवर्धन को लेकर भी सक्रिय रहे हैं। हमारा मानना है कि हिन्दी का विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक उसकी बोलियों – जैसे ब्रज, बुन्देली, अवधी, भोजपुरी, मैथिली आदि को भी उनके कद के अनुसार उचित सम्मान न मिले। हिन्दी की सर्जनात्मकता और ध्वन्या –त्मकता तभी बढ़ सकती है, जब वह अपनी रचनात्मक ऊर्जा अपनी लोक बोलियों से ग्रहण करे। इसी सोच को स्वीकृति देते हुए शब्दम् ने तय किया कि भोजपुरी भाषा के विकास और संवर्द्धन में सक्रिय रूप से लगे साहित्यकार प्रो० सदानन्द साही को सम्मानित किया जाय। उन्हें 'शब्दम् साहित्य सम्मान' देकर हम गौरवान्वित हैं।

पत्रिका के इस अंक में वर्ष भर नियमित किये जा रहे कार्यक्रमों की रपट तो है ही, कुछ नये कार्यक्रमों को प्रयोग के तौर पर आजमाया गया, उसकी झलक भी है। इन कार्यक्रमों में युवा कवि महेश आलोक का एकल काव्य पाठ एवं हिदुस्तान के प्रख्यात भजन गायक विनोद अग्रवाल द्वारा भक्ति भजन गायन का कार्यक्रम शामिल हैं। एक वर्ष में दूसरी बार समकालीन हिन्दी कविता से श्रोताओं का परिचय हुआ, जब स्थापना दिवस के अवसर पर भी मदन कश्यप, सदानन्द शाही, राजेश मल्ल तथा महेश आलोक की कविताओं ने पुनः नये तरह की कविता से श्रोताओं को

संस्कारित किया।

पद्मविभूषण, स्वतंत्रता सैनानी, समाज सुधारक जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयन्ती पर बहुत से कार्यक्रम किए गए, उनके नाम पर स्थापित शैक्षणिक एवम् गैरसरकारी संस्थाओं एवम् बजाज इलेक्ट्रीकल्स की 25 यूनिट, हिन्द लैम्प्स शिकोहाबाद एवम् उनकी कर्मभूमि वर्धा में सार्थक कार्यक्रम किए गए।

इस सबका संक्षेप विवरण भी इस अंक में शामिल है।

एक नये कलेवर में यह अंक आपके सामने है। सलाहकार मंडल के सदस्यों और कार्यालयीन टीम ने जिस लगन और निष्ठा से वर्ष भर की गतिविधियों और कार्यक्रमों को संयोजित किया, उसके लिए धन्यवाद ज्ञापित कर मैं उनके सार्थक योगदान को कम नहीं करना चाहती। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं विदा लेते हुए पत्रिका का नया अंक समीक्षार्थ आपके हाथों में सौंपती हूँ। आपकी सार्थक प्रतिक्रिया से हमें आगे बढ़ने का सम्बल मिलेगा।

"

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,
पीयूष-स्रोत बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।
देवों की विजय, दानवों की हारों का होता युद्ध रहा,
संघर्ष सदा उर-अंतर में जीवित रह नित्य-विरुद्ध रहा।
आँसू से भींगे अंचल पर मन का सब कुछ रखना होगा -
तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधिपत्र लिखना होगा।

- जयशंकर प्रसाद

"

ग्यारहवां ग्रामीण कवि सम्मेलन

- **कार्यक्रम विषय** : ग्यारहवां ग्रामीण कवि सम्मेलन • **दिनांक** : 18 जून 2017
- **अध्यक्षता** : श्री उदयप्रताप सिंह • **आमंत्रित कविगण** : कुमार मनोज, अजय 'अटल', राजीव 'राज', अरविन्द तिवारी • **स्थान** : सर्वोदय स्थली (ब्रह्मांडेश्वर) ग्राम सभा जलालपुर • **संचालन** : डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया
- **संयोजन** : शब्दम्

'सो गया नसीब, माँ का गया सिन्दूर और नंगे नौनिहालों की लँगोटियां चली गईं, भाई की पढ़ाई गई, बाप की दवाई गई, आपके लिए तो एक आदमी मरा हुजूर, मेरे घर की तो रोटियाँ चली गईं।' मंचीय काव्यपाठ का प्रारम्भ करते हुए ओजस्वी कवि श्री कुमार मनोज ने सरहद पर शहीद होने वाले जवानों के परिवार की वेदना को अपनी कविता के माध्यम से कुछ इस तरह व्यक्त किया।

कवि श्री अजय 'अटल' ने गीत प्रस्तुत करते हुए कहा –

'हलधर गंगा की धवल धार, संस्कृति संरक्षक धर्म द्वार, भारत के जनमन में बसते, तुम बनकर के पावन विचार। तुम से ही तो सम्भव अब तक पूरी दुनिया की उदरपूर्ति, खुद मरकर जीवन देते हो, तुमसे बढ़कर है गौ उदार, हर गंगा की धवल धार................ ।

इसी क्रम में काव्य पाठ करते श्री राजीव 'राज' ने अपने काव्यपाठ की प्रस्तुति में कहा 'बेटियाँ ही घर बनाती हैं, दरो दीवार को..................ने

काव्य पाठ करते कवि 'कुमार' मनोज।

काव्य पाठ का आनंद लेते श्रोतागण।

काव्य पाठ का आनंद लेते श्रोतागण।

काव्य पाठ करते राजीव 'राज'।

लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

श्री अरविन्द तिवारी ने अपने हास्य व्यंग्य से सभी उपस्थित लोगों को खूब हँसाया।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने ग्रामीणों के बीच कविता के संस्कार पैदा करने के लिए शब्दम् द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए संस्था अध्यक्ष किरण बजाज का बहुत धन्यवाद किया एंव आभार प्रकट किया। उन्होंने अपने काव्यपाठ में कहा, 'चार दिन की जिन्दगी, जिये तो क्या जिये। बात तो तब है जब मर जाए औरों के लिए............ अभी समय है सुधार कर लो ये मनमानी नहीं चलेगी'............ने लोगों को तालियां बजाने पर विवश कर दिया।

कार्यक्रम में पर्यावरण मित्र द्वारा जैविक उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गयी।

कार्यक्रम संचालन डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रजनी यादव ने दिया।

कार्यक्रम में लगभग 700 ग्रामीणजन एंव काव्यप्रेमी श्रोता उपस्थित थे।

काव्य पाठ करता छात्र।

काव्य पाठ करते अजय 'अटल'।

बाएं से डॉ. राजीव राज, माइक पर डॉ. रजनी यादव, उनके पीछे डॉ. अजय अटल, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, श्री उदयप्रताप सिंह, कुमार मनोज, श्री अरविन्द तिवारी।

कुमार मनोज

जन्म तिथि– 1 अक्टूबर 1982 शिक्षा– बी.एससी., एम.ए., बी.एड.

पता– 'विजयश्री' नयी मण्डी के पीछे, श्यामनगर इटावा

मोबाइल– 9410058570

महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा (मुगल गार्डेन दिल्ली) विभिन्न टी.वी. चैनलों एवं आकाशवाणी पर काव्यपाठ अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कार, देश के विभिन्न प्रान्तों में संयोजन, संचालन एवं काव्यपाठ सम्प्रति, सहायक अध्यापक, इटावा

कविता

कहीं भी, मुस्कुराने के बहाने ढूँढ लेते हैं
जो मेहनतकश हैं मिट्टी में खजाने ढूँढ लेते हैं,

नये जो यार थे सबने किनारा कर लिया दुख में
चलो कुछ दोस्त ऐसे में पुराने ढूँढ लेते हैं।

परिन्दे अपने बच्चों की हिफाजत के लिए अक्सर
अँधेरे में भी अपने आशियाने ढूँढ लेते हैं।

भटकते हैं वही जिनका भरोसा ही नहीं खुद पे
जे काबिल लोग हैं वो सौ ठिकाने ढूँढ लेते हैं,

सलीका सीखना है जिन्दगी का उन परिन्दों से
जो कूड़े में पड़े गेहूँ के दाने ढूँढ लेते हैं।

– **कुमार मनोज**

डॉ. अजय अटल

जन्म तिथि– 5 जून 1979 शिक्षा– एम.ए. अँग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, बी.एड, पीएच.डी
पता– 'विजयश्री' नयी मण्डी के पीछे, श्यामनगर इटावा
मोबाइल– 9027953540
व्यवसाय – प्राध्यापक गेंदा देवी डिग्री कॉलेज बरबारा कासगंज
प्रकाशनाधीन – श्री राम का दुर्गा आराधन तथा राधा कृष्ण की होली

कविता

नयन में सागर है वरना अश्रु नमकीन नहीं होते,
कण्ठ में करुणा है वरना गीत गमगीन नहीं होते।

सुना है मन के हारे हार, सुना है मन के जीते जीत,
खंडहर लगे इन्द्र का द्वार, मिले जब मन को मन का मीत।

कभी मधुमास जगाता त्रास,
कभी पतझर लगता मधुमास

दृष्टि रंगीली है वरना दृश्य रंगीन नही होते ....

ढूँढता फिरता है इन्सान, समस्याओं का सदा निदान
उचित अनुचित का उसको ज्ञान, किंतु बनता फिर भी अनजान

जिंदगी होती अगर अबाध
कौन करता बोलो अपराध

पेट यदि होता पीठ समान पाप संगीन नहीं होते ....

राम को विश्व मानता मगर राम का देश न माने राम
जोगिया घर का जोगी और सिरिया सिद्ध पराये गाम

राम यदि लेते मन में ठान
विश्व होता फिर हिंदुस्तान

धरा पर रूस, पाक, जापान, जर्मनी, चीन नहीं होते ....

डॉ. अजय अटल

डॉ० राजीव 'राज'

जन्मतिथि : 8 दिसम्बर 1975
शिक्षाः एम.एससी. (रसायन शास्त्र / पीएच.डी., बी.एड., एम.ए. (हिन्दी साहित्य) एम.ए. (संस्कृति साहित्य), एम.ए. (भूगोल), साहित्य रत्न / प्रयाग)
सम्पर्कः 239, ''प्रेम बिहार'', विजय नगर, इटावा – 206001 (उ.प.)
सम्मानः श्री के.एल. गर्ग सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान–2014 (मा. मुख्यमंत्री उ.प्र. शासन द्वारा प्रदत्त), शिवाजी दर्पण साहित्य सम्मान, ग्वालियर, म.प्र., ईश्वरी देवी एवं वीरेन्द्र सिंह स्मृति सम्मान (मा. लो.नि. मंत्री, उ.प. शासन द्वारा प्रदत्त), श्री अग्रवाल सभा चैन्नई, तमिलनाडु एवं श्री खेड़ापति हनुमान सेवा समिति धार, म.प्र. सहित अनेकानेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान
सम्पादनः श्री कृष्ण उद्घोष (त्रैमासिक पत्रिका), श्री कृष्ण करमायण (प्रबन्ध काव्य)
सम्प्रतिः शिक्षण एवं स्वतन्त्र लेखन

गीत – पतंगें

उड़तीं हैं चहुँओर पतंगें।
लगतीं हैं चितचोर पतंगें।
सबको खुश करने की खातिर,
नाचें बन के मोर पतंगें।
उड़ें गगन में मगर पतंगों सा है कौन अभागा।
उतनी ही परवाज मिली जितना चरखे में धागा।।
अम्बर का विस्तार नयन में स्वप्न सँजोता है।
दूर क्षितिज तक उड़ पाने की ख्वाहिश बोता है।
सपने तो सपने हैं अपने कभी नहीं होते,
बन्धन चाहे जैसा भी हो बन्धन होता है।
ठुमक रहीं कठपुतली बनकर,
घूम रही हैं तकली बनकर।
किस्मत की थापों पर बेबस,
बजती आयीं ढपली बनकर।
जगीं युगों की सुबहें लेकिन इनका भाग्य न जागा।
उतनी ही परवाज मिली जितना चरखे में धागा।।
पहले पहल पिता के हाथों में जी भर खेली।
उम्र चढ़ी प्रिय के इंगन पर डोली अलबेली।
रंग ढला जर्जर तनए कन्ने जब कमजोर हुए,
चरखा–डोर हाथ में अगली पीढ़ी ने ले ली।
यही निरन्तर क्रम जारी है।
यहाँ तरक्की भी हारी है।
औरों के हाथों में रहना,
ही पतंग की लाचारी है।
नुची लुटेरों से जिसने चरखे का बन्धन त्यागा।
उड़ें गगन में मगर पतंगों सा है कौन अभागा।।
देख थिरकती देह पतंगों की अम्बरतल पर।
ताली दे हँसती जो दुनिया खुश होती जमकर।
वही लगाकर दाँव, फँसाकर पेंच, काट देती,
ऊपर उठती हुयी पतंगें क्यों लगतीं नश्तर।
क्या उनको अधिकार नहीं है।
क्या उनका संसार नहीं है।
खुद से ऊपर उनका होना,
बोलो क्यों स्वीकार नहीं है।
कब तक शबनम पर जाएगा अहम का शोला दागा।
उड़ें गगन में मगर पतंगों सा है कौन अभागा।।

डॉ० राजीव 'राज'

एकल काव्य पाठ

- **कार्यक्रम** : एकल काव्य पाठ • **दिनांक** : 27 अगस्त 2017
- **अध्यक्षता** : श्री उमाशंकर शर्मा • **काव्यपाठ** : डॉ. महेश आलोक • **मुख्य अतिथि** : श्री पुन्नी सिंह
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन, शिकोहाबाद
- **संयोजन** : शब्दम्

हिन्दीभाषा के संवर्द्धन के लिए प्रयासरत देश की प्रसिद्ध संस्था शब्दम् द्वारा देश के चर्चित युवा कवि डॉ. महेश आलोक के एकल काव्यपाठ का सफल आयोजन 27 अगस्त 2017 को हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में किया गया।

लगभग एक घण्टे के काव्यपाठ में महेश आलोक ने जनसत्ता, आदि पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित अपनी कविताओं का पाठ किया, जिसे उपस्थित साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों ने मुक्त कण्ठ से सराहा। उल्लेखनीय है कि शब्दम् साहित्य के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर रही है, जिसके अंतर्गत 'पुस्तक चर्चा', 'एकल काव्यपाठ' तथा साहित्यकार सम्मेलन आदि के आयोजन हो रहे है।

रविवार को सम्पन्न हुए इस एकल काव्यपाठ आयोजन की अध्यक्षता शिकोहाबाद के साहित्य और संस्कृति प्रेमी श्री उमाशंकर शर्मा ने की। मुख्य अतिथि थे देश के जानेमाने हिन्दी कथाकार श्री पुन्नी सिंह जी। कार्यक्रम में अनेक कवियों तथा साहित्यकारों ने श्रोता के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

डॉ. महेश आलोक द्वारा प्रस्तुत कविता–

क्या कर रहे थे हम। क्या कर रहे थे
हमारे देवता
क्या कर रही थी पृथ्वी और हवा
क्या कर रहे थे पेड़। क्या कर रही थी चिड़िया
क्या कर रहे थे सूरज और चन्द्रमा
सबकी आँखों के सामने खेला जा रहा था

सदी का सबसे घिनौना कृत्य
और वह चीख रही थी,
जज महोदय आप दें या न दें
बच्चियाँ उन दरिन्दों को कविता में
दे रही हैं फाँसी..........

डॉ. महेश आलोक द्वारा एकल काव्य पाठ का दृश्य।

स्थापना दिवस सम्मान समारोह, विचार गोष्ठी '२१वीं सदी में मुक्तिबोध की कविता' एवं काव्य गोष्ठी

- **कार्यक्रम विषय** : स्थापना दिवस सम्मान समारोह, विचार गोष्ठी '21वीं सदी में मुक्तिबोध की कविता' एवं
- काव्य गोष्ठी **दिनांक** : 17 नवम्बर 2017 **सम्मान** : प्रो. सदानन्द शाही **आमंत्रित** : डॉ. राजेश मल्ल,
- श्री मदन कश्यप **अध्यक्षता** : श्री पुन्नी सिंह **विशिष्ट अतिथि** : श्री शेखर बजाज
- **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित संस्था शब्दम् ने अपने स्थापना दिवस सम्मान समारोह में प्रख्यात साहित्यकार प्रोफेसर सदानन्द शाही को सम्मानित किया। बजाज इलेक्ट्रिकल्स के प्रबन्ध निदेशक एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि शेखर बजाज एवं शब्दम् सलाहकार मण्ड़ल के सदस्यों ने प्रो. सदानन्द शाही को अंगवस्त्र, सम्मान पत्र, वैजयन्ती माला देकर सम्मानित किया। डॉ. महेश आलोक ने परिचय देते हुए कहा कि सदानन्द शाही न केवल चर्चित कवि एवं आलोचक हैं बल्कि हिन्दी की एक महत्त्वपूर्ण बोली जो अब भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है, उसके विकास एवं संवर्द्धन के लिए भी विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। शब्दम् ने उन्हें भोजपुरी भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए सम्मानित किया।

प्रो. सदानन्द शाही ने अपने भोजपुरी साहित्य

प्रो. सदानन्द शाही को सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते बजाज इलेक्ट्रीकल्स के प्रबन्ध निदेशक एवं शब्दम् वरिष्ठ सदस्य श्री शेखर बजाज।

सभागार में उपस्थित गणमान्य।

मुक्तिबोध पर अपने विचार व्यक्त करते प्रो. सदानन्द शाही

के संदर्भ में वक्तव्य देते हुए कहा कि 'भारत एक बहुभाषी देश है इसकी बहुभाषिकता इसकी सम्पदा है। जैसे हजारों नदियां यहाँ की धरती को सरसब्ज करती हैं वैसे ही हजारों भाषाएँ हमारे मनुष्य होने का अर्थ देती हैं। भाषाओं की इस सम्पदा को सुरक्षित रखना और उसे भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करना हमारा दायित्व है।'

इसके साथ ही नई कविता के सबसे चर्चित एवं महत्त्वपूर्ण कवि 'मुक्तिबोध' की जन्मशती के अवसर पर '21वीं सदी में मुक्तिबोध की कविता' विषय पर एक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। डॉ. महेश आलोक ने कहा कि 'मुक्तिबोध 20वीं सदी के अकेले ऐसे रचनाकार हैं जिनसे अनेक रचनाकार प्रेरणा ग्रहण करते रहे हैं। मुक्तिबोध का गहरा प्रभाव समकालीन हिन्दी कविता पर पड़ा है।'

मदन कश्यप ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'मुक्तिबोध' अग्रगामी चेतना के कवि थे। उन्होंने अपने समय के यथार्थ को केवल सतह पर नहीं देखा था बल्कि उसकी आंतरिक गतिशीलता को रेखांकित किया था इसलिए उनकी कविताएँ समय से आगे जाती हैं।'

डॉ. राजेश मल्ल ने कहा कि 'मुक्तिबोध ऐसे

मुक्तिबोध पर बोलते डॉ. राजेश मल्ल

वैचारिक और राजनीतिक कवि हैं जो आज के समय और समाज को समझने के लिए जरूरी दृष्टि मुहैया कराते हैं।'

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात कथाकार पुन्नी सिंह ने कहा कि पूरे कार्यक्रम में तीनों वक्ताओं ने जो भी कहा वह सारगर्भित था।

शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा कि 'संस्कृति और प्रकृति के प्रति प्रेम ही सच्ची देशभक्ति है और भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है। इस कारण हिन्दी भाषा के प्रसार के लिए उसे लचीला, सरल और सुगम तो होना ही होगा।'

उ.प्र. हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह का ऑडियो संदेश सुनाया

मुक्तिबोध पर अपने अनुभवों को शेयर करते श्री मदन कश्यप।

सभा को सम्बोधित करते श्री शेखर बजाज

गया एवं मुकुल उपाध्याय का संदेश पढ़कर सुनाया गया। अंत में काव्यगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों मदन कश्यप, सदानंद शाही, राजेश मल्ल और महेश आलोक ने अपने काव्यपाठ से श्रोताओं को मंचीय कविता से अलग हिन्दी की मुख्य धारा की कविता से परिचय कराया। कार्यक्रम में नगर के तमाम बुद्धिजीवी साहित्यकार, प्राचार्य, मीडिया कर्मी, अध्यापक एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे। संचालन डॉ. महेश आलोक एवं धन्यवाद ज्ञापन शब्दम् के वरिष्ठ सदस्य शेखर बजाज ने दिया।

प्रोफेसर सदानंद सम्मानित

प्रो.सदानंद सम्मानित

शब्दम संस्था का स्थापना दिवस धूम-धाम से मनाया गया

सम्मान पत्र के साथ प्रो. सदानन्द शाही, श्री शेखर बजाज एवं शब्दम् सलाहाकर मण्डल के सदस्य

काव्य गोष्ठी के दौरान पढ़ी गई कविताएँ।

'मैं कविता की दुनिया का स्थायी नागरिक नहीं हूँ
मेरे पास नहीं है इस दुनिया का ग्रीन कार्ड
कविता की दुनिया के बाहर
इतने सारे मोर्चे हैं
जिनसे जूझने में खप जाता है जीवन
इनसे न फुरसत मिलती है, न निजात
कि कविता की दुनिया की नागरिकता ले सकूँ'

– **प्रो. सदानन्द शाही**

बुद्ध से
'तुम्हारे पास ईश्वर नहीं था,
हमने तुम्हे ईश्वर बना लिया।
तुम्हें नहीं पता इतनी सी बात कि
धर्म ईश्वर के बिना नहीं चलता,
और ईश्वर डर के बिना।'

– **डॉ. राजश मल्ल**

ग़नीमत है कि पृथ्वी पर अब भी हवा है और हवा मुफ़्त है....
ग़नीमत है कि कई पार्कों में आप मुफ़्त जा सकते हैं
बिना कुछ दिए समुद्र को छू सकते हैं।
सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य देख सकते हैं
ग़नीमत है कि ग़नीमत है।

– **श्री मदन कश्यप**

'एक अच्छा दिन ऐसा हो कि कोई फूल न तोड़ा जाए किसी पेड़ से
किसी ईश्वर पर चढ़ाने के लिए
कि कोई चींटी न आए किसी जूते के नीचे
चन्द्रमा अपना जन्म दिन मनाए सूरज के घर।
एक अच्छा दिन ऐसा हो कि असंभव भी संभव हो एक दिन'

– **डॉ. महेश आलोक**

प्रोफेसर सदानन्द शाही
प्रशस्ति पत्र

हिन्दी के शैक्षणिक एवं साहित्यिक जगत् में प्रो0 सदानन्द शाही का नाम अपनी मौलिक प्रतिभा की रचनात्मकता एवं क्रियाशीलता के लिए जाना जाता है। उन्होंने एक प्रोफेसर–शिक्षक, लेखक, संपादक, चिंतक एवं प्रशासक के रूप में जो कीर्ति अर्जित की है, वह उनकी निरंतर जागरूकता एवं अभ्युदयशील कर्मठता तथा बहुमुखी प्रतिभा का प्रतिफल है।

कविता और समीक्षा के लिए पहले से ही विख्यात प्रो0 शाही ने 'कर्मभूमि', 'साखी' एवं 'भोजपुरी जनपद' का संपादन करके हिन्दी और भोजपुरी की समकालीन साहित्यिक–वैचारिकी में प्रभावशाली योगदान किया है। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक हिन्दी–विभाग की गौरवशाली आचार्य परंपरा को अपने शोध, अध्यापन एवं शोध निर्देशन के द्वारा और समृद्ध किया है।

प्रोफेसर शाही ने भोजपुरी समाज में आए उभार और भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए हो रहे संघर्षों की मूल भावना को आत्मसात करते हुए भोजपुरी और जनपदीय अध्ययन जैसे नये ज्ञानानुशासन का प्रस्ताव किया। वासुदेव शरण अग्रवाल ने पृथ्वी सूक्त से लेकर जनपदीय आन्दोलन चलाया था। इस अधूरे छूट गए अकादमिक कार्य को प्रो0 शाही जनपदीय अध्ययन के रूप में फिर से विकसित और प्रचारित प्रसारित कर रहे हैं। जिसे देश और विदेश में सराहना मिल रही है। प्रोफेसर शाही ने भोजपुरी अध्ययन केन्द्र की मूलभूत अधिरचना को जुटाने से लेकर उसका पाठ्यक्रम निर्मित–विकसित करने, कक्षाएं और कार्यशालाएं आयोजित करने, उसके लिए धन जुटाने और नई–नई योजनाएं बनाने तक सारा कार्य इतनी कुशलता से सम्पन्न किया कि आज भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताधिक विभागों की भीड़ में अलग से पहचाना जाता है। उन्होंने इस केन्द्र के माध्यम से भारत (विशेषतः भोजपुरी हिन्दी भाषी प्रदेश) और मॉरीशस के सम्बंधों को मजबूत बनाने में योग दिया।

डॉ0 शाही ने जर्मनी के हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय के 'साउथ एशियन इंस्टिट्यूट में' DAAD फेलो के रूप में अपनी शैक्षणिक गतिविधियों को अन्तरराष्ट्रीय विस्तार दिया। कबीर के माध्यम से प्रोफेसर शाही ने भारत की समावेशी मानव भावना का प्रसार जर्मनी, फ्रांस तथा इटली के विभिन्न विश्वविद्यालयों में किया। इसी क्रम में तूरिनो विश्वविद्यालय (इटली) के छात्रों–छात्राओं को हिन्दी–शिक्षण का कार्य उल्लेखनीय है। डॉ0 शाही ने 13–15 जुलाई 2007 को न्यूयार्क (अमेरिका) में आयोजित आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में सहभागिता की।

2009 में मॉरीशस में आयोजित विश्व भोजपुरी सम्मेलन में प्रो0 शाही ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और मॉरीशस में भोजपुरी को सरकारी भाषा बनवाने के प्रयत्नों को बल दिया। भोजपुरी भाषा और साहित्य की अप्रतिम सेवा के लिए मॉरीशस सरकार ओर से वहाँ के राष्ट्रपति ने प्रो0 शाही को विश्व भोजपुरी सम्मान 2014 से सम्मानित किया है।

आपने 1996 से 2009 के बीच मॉरिशिस, अमरीका, इटली, फ्रांस, जर्मनी, नेपाल की यात्राएं की हैं।

प्रो. शाही के दो कविता संग्रह 'असीम कुछ भी नहीं' तथा 'सुख एक बासी चीज़ है' के साथ एक दर्जन से अधिक आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने अपभ्रंश और दलित साहित्य पर उल्लेखनीय कार्य किया है।

स्पिक मैके एवं शब्दम् नॉर्थ ज़ोन रीजनल कन्वेन्शन-2017

- **कार्यक्रम** : स्पिक मैके एवं शब्दम् नॉर्थ ज़ोन रीजनल कन्वेन्शन–2017
- **दिनांक** : 26 जनवरी से 28 जनवरी 2017
- **सीन** : आईआईटी रूड़की, सहारनपुर कैम्पस, सहारनपुर, उ0प्र0

स्पिक मैके ने नॉर्थ ज़ोन रीजनल कन्वेन्शन –2017 आयोजित किया जिसमें 400 छात्र –छात्राएँ, 50 शिक्षक और 50 अन्य व्यक्ति, कुल मिलाकर लगभग 500 लोग उपस्थित रहे। शब्दम् ने भी अपनी सहभागिता निभाई।

तीन दिवसीय अधिवेशन का उद्‌देश्य विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों को एक सांस्कृतिक, संगीतमय वातावरण उपलब्ध कराना था, जो उनकी वर्तमान दिनचर्या से अलग हो।

धरती माँ के प्रति हमारा जो प्यार है,
उसे ही हम नृत्य कहते हैं .
– बिरजू महाराज

नृत्य की मुद्रा में कलाकार।

प्रस्तुति देते कलाकार

श्रोताओं के मध्य कलाकार।

आमंत्रित कलाकार – कत्थक नृत्यांगना मऊमाला नायक की प्रस्तुति

कार्यक्रम– कत्थक नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला | दिनांक– 1 से 4 मार्च 2017

स्थान– 1. यू सैनिक पब्लिक इण्टर कॉलेज, करहल रोड, बहादुरपुर 2. कुँ.आर.सी. इण्टर कॉलेज, मैनपुरी 3. कारगिल अमर शहीद इण्टर कॉलेज, आरोंज मक्खनपुर 4. श्री गयाप्रसाद इण्टर कॉलेज, आरोंज मक्खनपुर 5. संस्कृति भवन, हिन्दलैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद 6. राजकीय महिला इण्टर कॉलेज, आँवल खेड़ा, आगरा 7. राजकीय महिला महाविद्यालय, आँवल खेड़ा, आगरा 8. नव दुर्गा पब्लिक स्कूल, करहल रोड, बहादुरपुर 9. पालीवाल पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद

कलाकार परिचय | मऊमाला

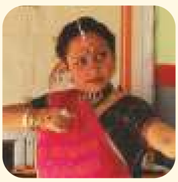

दिल्ली दूरदर्शन की 'ए' ग्रेड नृत्यांगना, पं. बिरजू महाराजजी की शिष्या, कत्थक नृत्य लखनऊ घराने की कलाकार, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की उल्लेखनीय सदस्या, मऊमाला नायक वर्तमान में गांधर्व महाविद्यालय में कत्थक प्रशिक्षिका, परीक्षिका स्वरूप कार्यरत हैं। भारत के प्रमुख सांस्कृतिक उत्सवों में अपनी कला के प्रदर्शन के अलावा अमेरिका, कनाडा, इटली, चीन, जापान, नेपाल, ऑस्ट्रिया, पोलैंड, स्लोवाकिया, बर्मा, मलेशिया में नृत्य प्रस्तुत कर चुकी हैं। स्पिक मैके के संपन्न प्रदर्शनों में गत पाँच वर्षों से सक्रिय रहीं हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय से इन्हें छात्रवृत्ति प्राप्त है। 'नृत्य शिरोमणि', 'कत्थक प्रवीण', पुरस्कारों, सम्मानों से विभूषित की जा चुकी है।

कलाकार परिचय | नीतू कुमारी

गत नौ वर्षों से मऊमाला नायक के सान्निध्य में कार्यरत सुश्री नीतू कुमारी गांधर्व महाविद्यालय से अलंकार कर चुकी हैं। काठमांडू (नेपाल), दक्षिण कोरिया, वियतनाम में कला प्रस्तुति कर चुकी हैं। भारत में ताज महोत्सव, कटक महोत्सव, वेदव्यास संगीत नृत्य महोत्सव, भारत भवन भोपाल इत्यादि प्रमुख महोत्सवों में अपना नृत्य प्रदर्शन कर चुकी हैं। स्पिक मैके के तहत कोटा (राजस्थान), बिलासपुर (मध्य प्रदेश), दमन में अपने गुरु के साथ संपन्न प्रदर्शनों में शामिल रही हैं।

नृत्य कला से शारीरिक व मानसिक विकास

मऊमाला के कथक नृत्य ने छटा

आमंत्रित कलाकार – अभय रुस्तम सोपोरी, तबला वादक– दुर्जय भौमिक

कार्यक्रम– संतूर वादन

दिनांक– दिनांक– 9 नवम्बर 2017 स्थान– हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन।

कलाकार परिचय | अभय रूस्तम सोपोरी

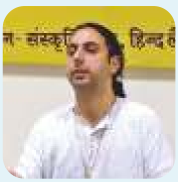

अभय रुस्तम सोपोरी जी का जन्म श्रीनगर में कश्मीर के सूफियाना घराने में हुआ था। यह घराना परम्परागत संतूर वादन में नौ पीढ़ी द्वारा 300 साल से अधिक समय तक कार्यरत रहा है। अभय जी ने संगीत की शिक्षा अपने बाबा साहब पं. शम्भूनाथ सोपोरी से गुरु–शिष्य परंपरा के अंतर्गत ग्रहण की है, जो जम्मू–कश्मीर में संगीत के पितामह के रूप में माने जाते हैं।

अभयजी ने पूरी दुनिया में प्रतिष्ठित समारोहों में भाग लिया है। आपको जम्मू–कश्मीर में प्रथम अंतरराष्ट्रीय ऐल्बम को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

अभयजी का संगीत कम्पोज़ीशन विश्वविख्यात जुबिन मेहताजी ने अपने प्रदर्शन में सम्मिलित करके जम्मू–कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय सम्मान दिलाया है। अभयजी ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कृत फिल्मों में संगीत दिया है, जिसमें भारत सरकार द्वारा महात्मा गांधी के जीवन पर बनी एवं U.N.O. में प्रदर्शित 'महात्मा' नामक फिल्म, शामिल है।

आपने मेनचेस्सटर यूनीवर्सिटी में भी अध्यापन का कार्य किया है। आपको अंतरराष्ट्रीय कान्फरेन्स TEDX में प्रथम भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञ के रूप में आमंत्रण का सौभाग्य प्राप्त है। आपको जम्मू–कश्मीर में संगीत विद्या से परिचय कराने का श्रेय प्राप्त है। आपको निम्नलिखित प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

संगीत नाटक एकेडमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ युवा पुरस्कार 2006, जे एण्ड के स्टेट अवार्ड–2011, डॉ. एस. राधाकृष्णनन नेशनल मीडिया अवार्ड–2017, प्राइड ऑफ पेराडाइज़ अवार्ड–2016, प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड–2015 संगीत गौरव सम्मान–2015 आदि।

कलाकार परिचय | दुर्जय भौमिक

कोलकाता निवासी श्री दुर्जय भौमिक एक प्रतिष्ठित तबलावादक हैं और उन्होंने लखनऊ घराने के विख्यात पंण्डित दुलाल नट्टा एवं पं. सुरेश तलवलकर से शिक्षा प्राप्त की है। आप दो दशकों से भारत के मुख्य संगीत समारोहों में तबला वादन की प्रस्तुति दे रहे हैं। आपको विदेशों जैसे अमरीका, रूस, यूरोप, मिडिलईस्ट एवं जापान में भी अपनी कला की प्रस्तुति देने का गौरव प्राप्त है।

संतूर के सुरीले स्वरों ने बांधा समां

संतूर वादन में अभय ने छेड़ी तान

नृत्य-संगीत

सांस्कृतिक कार्यक्रम

भक्ति संगीत

- **कार्यक्रम** : भक्ति संगीत
- **दिनांक** : 28 सितंबर 2017 ● **आमंत्रित अतिथि** : विनोद अग्रवाल
- **संयोजन** : हिन्दुस्तान, इनफिनिटी, शब्दम् एवं पूजा सोप ● **स्थान** : पालीवाल ऑडोटोरियम, फिरोजाबाद।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में हरि संकीर्तन की प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।
'मैं बाँके की बाँकी बन गयी और बाँका बन गया मेरा' जब विनोद अग्रवाल के कंठ से प्रस्तुत हुआ तो उपस्थित जन समूह भगवान में लीन हो गया।

मैं बांके की बांकी बन गई और बांका बन गया मेरा,
रसिया की, छलिया की, सजना की, सईया की
मैं बांके की बांकी बन गई और बांका बन गया मेरा।
उस बांके का सबकुछ बांका....

सभागार में तालियों के साथ झूमते श्रोतागण।

भजन संध्या में अपनी प्रस्तुति देते विनोद अग्रवाल।

'देशप्रेम गीत/कविता प्रतियोगिता'

● **कार्यक्रम** : 'देशप्रेम गीत/कविता प्रतियोगिता'

● **दिनांक** : 11 अगस्त 2017 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

शब्दम् द्वारा आयोजित 'देशप्रेम गीत/कविता प्रतियोगिता' का आयोजन हिन्द लैम्प्स स्थित संस्कृति भवन सभागार में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र–छात्राओं में देशप्रेम की भावना जागृत करना है।

कार्यक्रम दो वर्गों में हुआ जिसमें पहला वर्ग इण्टरमीडिएट तथा दूसरा वर्ग स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर का रहा। कुल 13 विद्यालयों के 25 विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी विद्यार्थियों की प्रस्तुति एक से बढ़कर एक रही। इस कारण निर्णायक मण्ड्ल को भी निर्णय देने में काफी मेहनत करनी पड़ी। इण्टरमीडिएट वर्ग में प्रथम पुरस्कार यंग स्कालर्स एकेडमी के प्रिंस यादव, द्वितीय पुरस्कार राज कान्वेंट पब्लिक स्कूल की सुलेखा यादव, तृतीय पुरस्कार सरस्वती शिशुमंदिर की जागृति दुबे का रहा। स्नातकोत्तर वर्ग में प्रथम पुरस्कार नारायण महाविद्यालय के प्रवीन कुमार आर्य, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार ओ3म् डिग्री कॉलेज के क्रमशः अंकित उपाध्याय एवं रवेन्द्र सिंह को प्राप्त हुए।

गीत कविता प्रतियोगिता में अपनी प्रस्तुती देते छात्र।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उमाशंकर शर्मा की। विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश आलोक थे। निर्णायक मण्ड्ल में मंज़र–उल वासै, मीना गुप्ता, अरविन्द तिवारी, एस.के. शर्मा थे।

समूह छायांकन।

शिक्षक सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम** : शिक्षक सम्मान समारोह एवं 'संस्कार निर्माण में शिक्षक की भूमिका' विषय पर चर्चा
- **अध्यक्षता** : श्री उदयप्रताप सिंह ● **सम्माननीय शिक्षक** : श्री उमाशंकर शर्मा, डॉ. राजश्री, डॉ. ज़मीर अहमद
- **दिनांक** : 4 सितम्बर 2017 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

विचार बदल गया, तो संसार बदल गया।

प्रमुख शिक्षाविद, संगीतकार और भारत सरकार की बाल संरक्षण समिति की सदस्य डॉ. राजश्री ने शब्दम् संस्था शिकोहाबाद द्वारा सम्मानित होने पर कहा, ''विचारों का बदलना छात्र और शिक्षक के जीवन में महत्त्वपूर्ण है।'' शब्दम् संस्था ने 'शिक्षक दिवस' की पूर्व संध्या पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने वाले तीन शिक्षकों का सम्मान संस्कृति भवन में किया। डॉ. राजश्री के अलावा प्रबुद्ध शिक्षक और चिंतक श्री उमाशंकर शर्मा तथा अध्यापक डॉ. ज़मीर अहमद को भी सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप इन्हें शॉल, प्रशस्ति पत्र, नारियल और वैजयन्ती माला और फलों की टोकरी प्रदान की गई।

श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा ''किसी राष्ट्र के सर्वनाश के लिए एटॉमिक बम या मिसाइल की जरूरत नहीं है। उसके लिए शिक्षा व्यवस्था को दोषपूर्ण बना देना ही पर्याप्त है। राष्ट्रनिर्माताओं की पूर्ति करना शिक्षक का महत्त्वपूर्ण दायित्व है। अत: शिक्षक सबसे बड़ा राष्ट्रनिर्माता होता है।''

डॉ. नन्दलाल पाठक ने अपने संदेश में गीता की शिक्षाओं का हवाला देते हुए कहा, ''आदर्श शिक्षक वह है जो छात्र को आत्म निरीक्षण के लिए प्रेरित कर सके। हर अनुभव आत्मशिक्षण का आधार होता है। इस प्रकार 'सारा जीवन आत्मशिक्षण है'।''

इस अवसर पर आयोजित शैक्षिक गोष्ठी में चिंतक और शिक्षक उमाशंकर शर्मा ने कहा,

समूह छायांकन।

डॉ. राजश्री को सम्मानित करते सलाहकार समिति के सदस्य।

श्री उमाशंकर शर्मा को सम्मानित करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

''यदि छात्र विराट के सौन्दर्य में विभोर हो सके तो यह शिक्षक की सफलता है। अध्यापक का आचरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अन्य पेशे में आचरण से विचलन बर्दाश्त किया जा सकता है लेकिन शिक्षण जैसे पवित्र पेशे में हर्गिज नहीं किया जा सकता।''

गोष्ठी में डॉ. राजश्री ने कहा कि ''संस्कार के मूल में आदर्श विचार होते हैं। विचार सत्य एवं शाश्वत है। विचार बदल गया तो संसार बदल गया। छात्रों को आत्मनिरीक्षण हेतु प्रेरित करना सफल शिक्षक का महत्त्वपूर्ण गुण है।''

डॉ. ज़मीर अहमद ने कहा कि छात्रों का समग्र विकास करना ही शिक्षक का लक्ष्य है।

डॉ. ज़मीर अहमद को सम्मानित करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

सभागार का दृश्य।

डॉ. राजश्री का परिचय | डॉक्टर राजश्री, संगीत (गायन) एवं दर्शनशास्त्र में परास्नातक उपाधियों के अतिरिक्त बी.एड. एवं एम.एड. के साथ 'शिक्षा–शास्त्र' में डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत हैं। यह उल्लेखनीय है कि डॉक्टर राजश्री ने अपनी पूरी शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में सुविख्यात दयालबाग शैक्षणिक संस्थान से प्राप्त की है। अध्यापन एवं समाज सेवा

आपकी विशिष्ट उत्कंठा एवं लालसा के विषय हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के उत्थान और युवाओं में उनके प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित संस्था 'स्पिक मैके' की पश्चिमी उत्तर प्रदेश की आप 2004 से समन्वयक हैं। बिना किसी लाभ– अर्जन के चलने वाली यह गैर सरकारी अन्तरराष्ट्रीय संस्था है, जिसमें विश्व स्तरीय महिला एवं पुरुष कलाकार हैं। आजकल डॉक्टर राजश्री वर्ष में शास्त्रीय संगीत के 50–60 कार्यक्रम विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में आयोजित कराती हैं। डॉक्टर राजश्री, उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त बाल कल्याण समिति आगरा की सदस्य हैं। सन् 1999 से फिरोज़ाबाद के दाऊदयाल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में शिक्षण कार्य कर रही हैं। इस प्रकार डॉ राजश्री पूर्ण रूप से से 'शिक्षण' और 'समाज–सेवा' को समर्पित हैं। संस्था उनके स्वस्थ एवं सुदीर्घ सुजीवन की सुकामना करती

डॉ. ज़मीर अहमद का परिचय | 09 अप्रैल, 1954 को जन्में डॉ ज़मीर अहमद, के. के. स्नातकोत्तर महाविद्यालय इटावा के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पद से सेवा–निवृत्त हैं, प्राध्यापक रूप में आप अपने विद्वता पूर्ण एवं सरस लेक्चर्स के कारण लोकप्रिय है। विद्यार्थियों के बीच उनकी लोकप्रियता का यह परिणाम रहा कि वे उनमें अनुशासन बनाये रखने में पूर्ण सफल रहे और इस क्षेत्र में भी वे बहुत सजग रहे कि छात्रों में धूम्रपान जैसी कोई अवांछित आदत पनपने ही न पाये।

आपका शोध–प्रबन्ध, साहित्य में नोबल प्राइज प्राप्त, अंग्रेजी उपन्यासकार विलियम गोल्डिंग के उपन्यासों पर है, स्वयं विलियम गोल्डिंग (अब दिवंगत) का डॉ. ज़मीर को हस्तलिखित पत्र उनकी विशेष उपलब्धि है। विभिन्न विषयों पर 46 लघु–शोध प्रबन्धों का निर्देशन आपने किया है। अंग्रेजी की विभिन्न स्तरीय पत्रिकाओं में आपके शोध–परक, आलेख प्रकाशित होते रहे हैं।

विभिन्न राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में आयोजित सेमीनार्स में अपने विषय के अतिरिक्त मानवाधिकार और निर्धनता, पर्यावरण–प्रदूषण, जैसे विषयों पर आपके आलेखों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई और राष्ट्रीय एकता और धर्म निर्पेक्षता जैसे विषयों पर आपकी वार्ताएँ प्रसारित हुईं। अंग्रेजी विषय पर आपकी, छात्र छात्राओं के लिए उपयोगी, कई स्तरीय पुस्तकें प्रकाशित हुईं और कई अन्य प्रकाशनाधीन हैं। सेवा–निवृत्ति के पश्चात् भी आप आर्थिक रूप से निर्बल छात्र–छात्राओं के हितार्थ शिक्षा की अलख जगाए हुए हैं और इस हेतु वे पूर्ण रूप से समर्पित हैं। संस्था उनके स्वस्थ एवं सुदीर्घ सुजीवन की सुकामना करती है।

श्री उमाशंकर शर्मा परिचय | श्री उमाशंकर शर्मा एक ऐसे 'मकनातीसी' व्यक्तित्व के धनी हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में जिनके सम्पर्क में वे रहे वे उनके लिए अनुकरणीय बन गये। जिन्होंने उनका छात्र–जीवन देखा है वे जानते हैं कि ऐसे छात्र ही आदर्श शिक्षक बनने की प्रतिभा रखते हैं। शिक्षण कार्य तो उन्होंने लगभग दो वर्ष ही किया किन्तु शिक्षा क्षेत्र से उनका जुड़ाव बहुत और बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। शिक्षण के ही एक गुरुतर दायित्व अर्थात् उप विद्यालय निरीक्षक का पद

आपने लगभग 18 वर्ष तक सम्भाला। इस पद पर रहते हुए आप शासन की ओर से विदेशों से आने वाले अतिथियों के सम्पर्क में आने पर आपने आगरा सहित भारत भर के कला, साहित्य, संस्कृति, दर्शन और इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठों को उनके माध्यम से अनेक देशों तक पहुँचाया। आज अस्सी वर्ष से भी अधिक आयु में श्री शर्मा अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सलाहकार अध्यक्ष, संरक्षक एवं मार्ग दर्शक के रूप में समाज एवं देश सेवा में निरत हैं। ''श्री शर्मा वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति की स्थानीय इकाई के मुख्य संरक्षकों में से एक हैं और हमें फ़ख़्र है कि वे शब्दम् सलाहकार मंडल के वरिष्ठतम सदस्य हैं।'' संस्था उनके स्वस्थ एवं सुदीर्घ सुजीवन की सुकामना करती है।

छात्र सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम विषय** : रोज़ी–रोटी और हिन्दी
- **दिनांक** :18 सितंबर 2017 ● **सम्मान** : स्थानीय हिन्दी पत्रकार एवं विभिन्न विद्यालयों से हिन्दी विषय में
- इण्टर में 80 प्रतिशत तथा स्नातक/ स्नातकोत्तर में 70 प्रतिशत अंक लाने वाले छात्रों का सम्मान
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

शब्दम् के हिन्दी दिवस समारोह में बोलते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद समाजसेवी उमाशंकर शर्मा ने छात्र–छात्राओं का आह्वान किया कि वे अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव को पहचानें, हिन्दी से हम सब गौरवान्वित हैं। 18 सितम्बर को शब्दम् संस्था ने जिले के ही नहीं बल्कि मंडल के छात्र–छात्राओं को हिन्दी विषय में उत्कृष्ट अंक लाने के लिए सम्मानित किया। टूंडला, शिकोहाबाद, सिरसागंज, मैनपुरी के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों के 117 छात्र–छात्राओं को हिन्दी प्रतिभा सम्मान दिया गया। इनमें इण्टर से लेकर एम.ए. तक के विद्यार्थी शामिल थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कहानीकार पुन्नी सिंह थे तथा अध्यक्षता शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य उमाशंकर शर्मा ने की। शब्दम् संस्था का परिचय डॉ. महेश आलोक ने दिया। इस अवसर पर नगर के 15 पत्रकारों को हिन्दी सम्मान देते हुए उन्हें हरित कलश और फलों की टोकरी प्रदान की गई। सम्मानित होने वाले पत्रकारों में दिनेश बैजल, दिनेश वशिश्ट, विकास पालीवाल, गगन तोमर, निकुंज यादव, नवीन उपाध्याय, उमेश शर्मा, बनवारी लाल कुशवाहा, प्रवेन्द्र यादव, रामप्रकाश गुप्ता, राममोहन और मुकेश गुप्ता थे।

'रोजी–रोटी और हिन्दी' विषयक गोष्ठी में बोलते हुए प्रसिद्ध कवि महेश आलोक ने कहा कि हिन्दी 85 प्रतिशत भारतीयों द्वारा समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी के विकास के लिए हिन्दी के साथ

सम्मान पत्र के साथ विद्यार्थियों का समूह छायांकन।

अन्य भारतीय भाषाओं को भी सीखना चाहिए। मुख्य अतिथि कथाकार पुन्नी सिंह ने देश में हिन्दी को सम्मान न देने की प्रवृत्ति पर हैरानी जताई। उन्होंने कहा भारत के अलावा कोई और देश नहीं है जहाँ स्वयं की भाषा का अपमान होता हो। हमें इस स्थिति को बदलना है। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा ने उन शिक्षकों को बधाई दी जिनके शिष्यों ने यह सम्मान प्राप्त किया।

हिन्दी विषय में अधिकतम अंक लाने पर सम्मान प्त्र प्राप्त करतीं छात्राएँ।

सभागार में उपस्थित शिक्षक एवं पत्रकारगण।

सम्मान पत्र के साथ विद्यार्थी एवं मंचासीन अतिथि।

हिंदी के मेधावी सम्मानित

हिंदी के मामले में भारत सबसे बड़ा लापरवाह: पुन्नी सिंह

शब्दम संस्था ने 117 छात्र-छात्राओं का किया सम्मान, हमें अंग्रेजी की गुलामी स्वीकार नहीं: डॉ महेश

हिन्दी में बेहतर अंक लाने वाले सम्मानित

हिंदी से मिला विद्यार्थियों को सम्मान

SHIKOHABAD (18 Sept.): हिंदी में अच्छे अंक हासिल करने वाले 117 छात्र-छात्राओं को शब्दम् संस्था द्वारा हिंदी प्रतिभा सम्मान दिया गया. यह सम्मान इंटर से लेकर एमए तक के छात्र-छात्राओं को दिया गया. सम्मान पाकर इनके चेहरे खिल गए. हिंदी को बढ़ावा देने के लिए यह पहल की गई है. शब्दम् के हिन्दी दिवस समारोह में बोलते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद् उमाशंकर शर्मा ने छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि हिंदी के गौरव को पहचानने की जरूरत है. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कहानीकार पुन्नी सिंह थे तथा अध्यक्षता शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य उमाशंकर शर्मा ने की.

हिन्दी प्रश्नमंच

शब्दम् हिन्दी प्रश्नमंच निम्न उद्देश्यों के अंतर्गत विभिन्न विद्यालय एवं महाविद्यालयों में आयोजित किया जाता है।

उद्देश्य

- हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रति सम्मान और जिज्ञासा पैदा करना।
- विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के शब्दों के उच्चारण, शुद्धता एवं शब्दकोश के प्रति जागरूकता पैदा करना।
- विद्यालय, महाविद्यालयों में हिन्दी के बृहत् ज्ञान के प्रति उत्सुकता पैदा करना– जिससे हिन्दी पुस्तकें पढ़ने की रुचि बढ़े।

शब्दम् द्वारा अभी तक लगभग 235 विद्यालय–महाविद्यालयों के 90 हजार छात्र–छात्राओं के मध्य प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किया जा चुका है।

प्रश्नमंच पूछते श्री मंज़र–उल वासै एवं प्रश्न का उत्तर देने के लिए हाथ खड़ा करते विद्यार्थी।

वर्ष 2016–17 में भाग लेने वाले महाविद्यालय/विद्यालय

श्रीमती ज्ञानवती उ.मा. विद्यालय असुआ, शिकोहाबाद
जे.एस एकेडमी, शिकोहाबाद
उदयभान सिंह पातीराम उ.मा. विद्यालय, शिकोहाबाद
श्रीगोपाल कृष्ण स्मारक इण्टर कॉलेज
आईवी इंटरनेशनल एकेडमी,फिरोजाबाद
द एशियन स्कूल, शिकोहाबाद
श्री साहब सिंह कन्या इण्टर कॉलेज, मुस्तफाबाद रोड, शिकोहाबाद।
कृष्टो एकेडमी, शिकोहाबाद।
तारादेवी इण्टर कॉलेज, आगरा
श्री गजराज सिंह उ.मा. विद्यालय, शिकोहाबाद
मान्धाता पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
गार्डेनिया इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद
न्यू नारायण पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद
नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद
पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद
राजकीय इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद
एस.डी.एम. कॉलेज ककरारा, शिकोहाबाद
गिरधारी इण्टर कॉलेज, सिरसागंज
ब्राइट राइडर्स पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
फ़ातिमा पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
शिकोहाबाद पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
बी.आर. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
हुब्बलाल बालिका, विद्यालय, उसायनी
डी.डी. कॉन्वेट पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
जे.एस. कॉलेज ऑफ इस्टीट्यूट, शिकोहाबाद
शान्ति देवी आहूजा महिला महाविद्यालय, शिकोहाबाद
संत ब्रह्मानंद, शिकोहाबाद।
राजकीय महिला महाविद्यालय, सिरसागंज
गांधी स्मारक इण्टर कॉलेज, अलीगढ़
विजय कमल इण्टर कॉलेज, अलीगढ़

जूनियर, इंटरमीडिएट और ग्रेजुएट वर्ग तक के 3000 से अधिक छात्र–छात्राओं ने उत्साह के साथ अपने–अपने विद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया।

विद्यालय–महाविद्यालयों ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया, जिसके लिए शब्दम् आभारी है। प्रश्नमंच कार्यक्रम 'शब्दम्' सलाहकार मंज़र–उल वासै एवं शब्दम् टीम के ऊर्जान्वित प्रयास के कारण उपर्युक्त सफलता तक पहुँचा है।

प्रश्न का उत्तर देती छात्रा।

दूसरा फोटो– पुरस्कार के साथ समूह छायांकन।

प्रश्नमंच कार्यक्रम की झलकियां।

हिंदी प्रश्नमंच में 400 छात्रों ने लिया हिस्सा

प्रतिभागियों को सम्मानित करते शब्दम् संस्था के सदस्य

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद।

प्रश्न मंच में छात्राओं ने दिखाया उत्साह

शिकोहाबाद | हिन्दुस्तान संवाद

शब्दम संस्था ने विद्यालयों में कराया हिन्दी प्रश्नमंच

...छात्राओं को किया गया पुरस्कृत

उच्चस्तरीय ग्रीष्मकालीन शिविर

- **कार्यक्रम** : उच्चस्तरीय ग्रीष्मकालीन शिविर
- **दिनांक** : 21 मई से 30 मई 2017 ● **आमंत्रित अतिथि** : विनोद अग्रवाल
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन ● **शिक्षक** : श्री मंजर–उल वासै, श्रीमती मधु शुक्ला, नेहा यादव, श्रीमती गरिमा शुक्ला

शब्दम् ने उच्चस्तरीय ग्रीष्मकालीन शिविर में 60 से अधिक छात्राओं को सिलाई कला, सौन्दर्यीकरण, पाककला, नृत्य के साथ–साथ कुकिंग में प्रयोग आने वाले उत्पादों की जानकारी तथा महिलाओं को कानूनी जानकारियाँ भी दीं। शब्दम् का उद्देश्य इन कलाओं के माध्यम से महिलाओं को स्वावलम्बी और जागरूक बनाना था। अंतिम दिन सभी छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति दी। रंगारंग कार्यक्रम के अंतर्गत समर कैम्प के दौरान सीखी कलाओं को कैटवॉक के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा छात्राओं ने एकल और ग्रुप नृत्य भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन भी समर कैम्प की दो छात्राएं दीपिका यादव एवं कीर्ति शुक्ला ने किया। कार्यक्रम के अंत में कानपुर से पधारीं कथक नृत्यांगना नेहा यादव ने अपनी प्रस्तुति दी। कुल मिलाकर उच्चस्तरीय ग्रीष्मकालीन शिविर सफल रहा।

बीच–बीच में छात्राओं ने मंच से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं, जिनमें से कुछ निम्न हैं :

''आज मैं बहुत खुश हूँ मेरे परिवार में कोई भी नहीं है और अपने तीन बच्चों का गुजारा मैं स्वयं चलाती हूँ। मैंने समर कैम्प केवल ब्यूटीशियन के लिए ज्वाइन किया था पर इसमें शब्दम् ने जो आंतरिक कलाओं का विकास किया, वह मेरी जैसी महिला के लिए बहुत अद्भुत है। मैंने कल

सिलाई प्रशिक्षण देतीं शिक्षिका।

ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण देतीं शिक्षिका।

अखबार की कटिंग पर कपड़ा काटना सीखतीं छात्राएँ।

रात 9:00 बजे तक जागकर अपनी बेटी के लिए यह फ्रॉक बनाई है।'' यह कहते हुए संगीता शर्मा की आँखों में आँसू आ गये। भावुक अंदाज में संगीता शर्मा ने बताया कि वह सिलाई कला के माध्यम से अब अपने परिवार का गुजारा कर सकती हैं।

पूनम बघेल, जिनके पिताजी ने संन्यास ले लिया ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने जिन्दगी में एक–एक रुपये का संघर्ष देखा है। उन्हें इस कैम्प से यह आत्मबल मिल गया है कि जिन्दगी के संघर्षों का सामना एक नारी अकेले भी कर सकती है।

श्रीमती राखी ने कहा कि ''मुझे बताया गया कि समर कैम्प में बैग बनाना सिखाने का चयन इसलिए किया गया है कि हम लोग बैग बनाने के बाद हर सामान बैग में लाएं और पॉलीथिन का प्रयोग न करें। मैं संकल्प लेती हूँ कि आगे से कभी पॉलीथिन का प्रयोग नहीं करूँगी।''

इस प्रकार अनेक छात्राओं ने अपनी–अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

नृत्य की प्रस्तुति देतीं छात्राएँ।

स्वयं द्वारा बनाए गए बैगों के साथ छात्राएँ।

जूसर मिक्सर ग्राइर के बारे में जानकारी देते बजाज इलेक्ट्रिकल्स के अधिकारी नीरज पाठक।

प्रमाण पत्र के साथ विद्यार्थी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्त्री सशक्तिकरण

राखी मिलन समारोह

- **कार्यक्रम** : राखी मिलन समारोह
- **दिनांक** : 4 अगस्त 2017 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

शब्दम् संस्था ने राखी के अवसर पर 'राखी मिलन समारोह' कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें हिन्द परिसर कॉलोनी की बहनों ने शब्दम्–पर्यावरण मित्र में कार्यरत टीम के सदस्यों को तिलक वन्दन कर, कलाई पर राखी बांधी। सारी राखिया पर्यावरणीय थीं जिन्हें शब्दम् सिलाई केन्द्र की छात्राओं ने प्रयोग में न आने वाले कपड़े, इत्यादि की सामग्री से तैयार किया।

राखी बाँधती बहनें।

सुरक्षाधिकारी को राखी बाँधती बहन।

समूह छायांकन।

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

पिछले बारह वर्षों में शब्दम् जानकीदेवी सिलाई केन्द्र लगभग 2500 बालिकाओं/महिलाओं को सिलाई कला में निपुण बनाकर स्वावलम्बी बना चुका है।

अभी तक संस्था नगला बाँध, बढ़ाईपुरा, झमझमपुर, बैरई, मेवली, नगला सुन्दर, खतौली, रसूलपुर, नगला टीकाराम, छोटी सियारमऊ, बड़ी सियारमऊ, नगला लोकमन, नगला जवाहर, नगला ऊमर, बड़ी गैलरई, नगला सीताराम, हरगनपुर, नगला चन्दा, लाछपुर, छेछापुर, सुजावलपुर, नसीरपुर आदि ग्रामों में सिलाई केन्द्र संचालित कर चुकी है।

वर्तमान में संस्था दो सिलाई केन्द्र हिन्द लैम्प्स परिसर में एवं दो सिलाई केन्द्र ग्रामीण अंचल के ग्राम फतेहपुर कर्खा और ग्राम दतावली में चला रही है।

सिलाई केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण सीख रही कुछ छात्राओं के विचार

मैं यहाँ जब सिलाई सीखने आई थी तब मुझे कुछ भी सिलना नहीं आता था। अब थोड़ा बहुत सीख गई हूँ। सिलने की कोशिश भी कर रही हूँ। मैडम द्वारा अच्छे से सिखाया जाता है।

– ज्योति

सिलाई में मेरा कभी भी मन नहीं लगता था जब मैंने यहाँ पर आकर देखा तो मेरे अन्दर सिलाई सीखने की जिज्ञासा हुई और सिलाई सीखना शुरू कर दिया। मैंने यहाँ पर बहुत सारी नई–नई चीजें सीखी हैं।

– शिखा

मुझे सिलाई केन्द्र के साथ–साथ यहाँ का वातावरण भी अच्छा लगता है। मेरा सिलाई सीखने का फैसला गलत नहीं था। मैं सिलाई केन्द्र से विभिन्न प्रकार की सिलाई सीखना चाहती हूँ।

शिकोहाबाद हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित जानकी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज के साथ सिलाई केन्द्र की छात्राएँ।।

सिलाई केन्द्र में विभिन्न अवसरों पर हुई प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम।

होली में प्राकृतिक रंग बनाने का प्रशिक्षण एवं रंगोली प्रतियोगिता

शब्दम् सिलाई केन्द्र में प्रशिक्षण ले रही छात्राओं को होली के उपलक्ष्य में प्राकृतिक रँगों को बनाने की विधि का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत चुकन्दर, पालक एवं हल्दी चन्दन से प्राकृतिक रंग बनाकर उसमें डाली जाने वाली सामग्री की मात्रा एंव प्रयोग के बारे में बताया गया तथा रँगो की रंगोली भी बनाई।

रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेती सिलाई केन्द्र की छात्राएं।

प्राकृति रंगों का प्रशिक्षण प्राप्त करतीं छात्राएँ।

हरियाली तीज के उपलक्ष्य में बजाज उत्पाद एवं पाक कला प्रशिक्षण

सिलाई केन्द्र की छात्राओं को सिलाई केन्द्र की शिक्षिकाओं एवं बजाज इलेक्ट्रिकल्स से आये नीरज पाठक द्वारा बजाज उत्पादों के प्रयोग की जानकारी एवं पाक कला का प्रशिक्षण दिया गया। दूर–दराज गाँवों से आने वाली छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ बजाज उत्पादों को चलाने की विधि को समझा और पुनः इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को लगाए जाने के लिए संस्था से आग्रह किया। सिलाई केन्द्र के बाहर स्थित लॉन में वृक्षारोपण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बजाज उत्पादों की जानकारी एवं पाक कला का प्रशिक्षण देते श्री नीरज पाठक

वन महोत्सव सप्ताह के अंतर्गत पौधारोपण में भाग लेती छात्राएँ।

राखी प्रतियोगिता कार्यक्रम

हिन्द परिसर में चलाए जा रहे सिलाई केन्द्र के दोनों सत्रों में राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन में छात्र–छात्राओं ने अनुपयोगी सामग्री का प्रयोग कर भिन्न–भिन्न प्रकार की राखी तैयार की। छात्राओं ने एक से बढ़कर एक अच्छी राखी बनाने का प्रयास किया।

प्रथम सत्र में श्रीमती सरिता, कु. शिक्षा, कु. निशा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय सत्र में कु. वन्दना तिवारी, कु. सुशीला, कु. अंजली ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जानकी सिलाई केन्द्र के प्रथम सत्र में राखी प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा तैयार की गई राखीयाँ तथा शिक्षकाओं के साथ समूह छायांकन।

जानकी सिलाई केन्द्र के द्वितीय सत्र में राखी प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा तैयार की गई राखीयाँ तथा शिक्षकाओं के साथ समूह छायांकन।

काला रंग भावनात्मक रूप से बुरा होता है लेकिन हर श्याम पट विधार्थियों की जिंदगी रोशन बनाता है।

– एपीजे अब्दुल कलाम

जानकी बालिका महिला पाठशाला – निरक्षरता से साक्षरता की ओर

ग्राम – झमझमपुर – 45 वर्ष की ओमवती देवी और 30 वर्ष की अकीला की जिन्दगी बेहद संघर्षपूर्ण रही है। अपनी ऊर्जा और जीने के जज़्बे से हर संघर्ष को पार तो किया पर इस लड़ाई में स्कूल की किताबें कहाँ छूट गईं, यह उन्हें पता ही नहीं चला। आज चाहे वो राशन की लाइन हो या वोट देने का समय, जब अँगूठा लगाना पड़ता है तो मन में यह प्रश्न सदैव रहता है कि हमको अपना नाम लिखना तो आना ही चाहिए था।

'शब्दम्' की टीम ने गाँव में बालिका महिला पाठशाला खोलने के लिए जब सर्वे किया तो अकीला, ओमवती देवी जैसी कई महिलाओं ने महिला बालिका पाठशाला में पढ़ने की इच्छा जताई।

जानकीदेवी शब्दम् बालिका–महिला पाठशाला ने शिक्षा की धारा से छूट चुकी महिलाओं–बालिकाओं को अक्षर ज्ञान एवं अंक ज्ञान देकर साक्षर बनाया।

जानकी बालिका/महिला पाठशाला में अक्षर ज्ञान प्राप्त करती महिलाएँ।

शिक्षा के लाभ एवं पाठशाला के उद्‌देश्यों की जानकरी देते श्री मंज़र–उल वासै।

जानकी बालिका/महिला पाठशाला के दृश्य।

जानकीदेवी बजाज 125वीं जयन्ती समारोह

जानकीदेवी बजाज
—125वीं जयंती - 2018—

● **कार्यक्रम:** श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर का 110वां स्थापना दिवस एवं जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयंती समारोह
● **दिनांक :** 6 एवं 7 जनवरी 2018 ● **स्थान :** वर्धा (महाराष्ट्र)

पद्मविभूषण, स्वतंत्रता सैनानी तथा समाज सुधारक जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयंती एवं श्रीमती जानकीदेवी बजाज श्री जमनालाल बजाज द्वारा भारत में दलितों के लिए सबसे पहले खोले गये श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर (वर्धा, महाराष्ट्र) की स्थापना के 110 वर्ष के उपलक्ष्य में वर्धा में दिनांक 6 एवं 7 जनवरी 2018 को विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

बजाज परिवार तथा वर्धा के गणमान्य लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। 6 जनवरी को गांधी चौक में कबीर कैफे (फ्युज़न, कबीर संगीत) का कार्यक्रम आयोजित किया

कबीर संगीत प्रस्तुत करते हुए कबीर कैफे के कलाकार।

गया। श्री नीरज आर्य एवं उनके संच ने कबीर के भजनों को पॉप, रेगे, रॉक, फॉक इस तरह अलग अंदाज में फ्यूजन संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिसे नागरिकों ने खासकर युवा वर्ग ने बहुत पसंद किया।

जानकीदेवी बजाज साइंस कॉलेज में शहर के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, श्री राहुल बजाज, श्रीमती सुमन जैन एंव पवनार आश्रम की कालिंदी बहन ने जानकीदेवी के संस्मरण सुनाये।

'नई तालीम' द्वारा संचालित आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम में बालकों के रंगारंग कार्यक्रम का आनंद लिया।

आनंद निकेतन के विद्यार्थियों द्वारा मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति।

साज सज्जा के साथ श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर वर्धा।

कबीर संगीत का आनंद लेते हुए श्री राहुल बजाज, बजाज परिवार के सदस्य एवं अन्य गणमान्य।

शिकोहाबाद: जानकीदेवी बजाज की १२५वीं जयन्ती पर भव्य आयोजन

शब्दम् के तत्त्वावधान में 7 जनवरी 2018 को श्रीमती जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयन्ती बड़े धूमधाम से मनायी गई। प्रातः 8:00 बजे हिन्द लैम्प्स परिसर में श्री सिद्धेश्वरनाथ मंदिर से प्रभातफेरी प्रारम्भ हुई जो श्री जमनालाल अरण्य से होते हुए जानकी आँवला वाटिका पहुँची जहाँ भव्य पूजा का आयोजन किया गया तथा वृक्षारोपण किया गया। बाद में यह प्रभात फेरी हिन्द लैम्प्स परिसर का चक्कर लगाकर पुनः श्री सिद्धेश्वर मंदिर पहुँची। प्रभात फेरी में उपस्थित जनसमुदाय श्रीमती जानकीदेवी बजाज के प्रिय भजनों को गाता हुआ चल रहा था।

मंदिर में सभी विग्रहों का पूजन, रूद्राभिषेक, श्रीविष्णुसहस्रनाम, गीता पाठ, हनुमान चालीसा एवं सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया।

दोपहर दो बजे से जानकीदेवी बजाज के व्यक्तित्व पर आधारित लघु चित्रिका प्रदर्शनी का उद्घाटन अतिथियों द्वारा किया गया।

जानकी आंवला वाटिका में प्रभात फेरी का दृश्य।

श्रीमती जानकीदेवी जी की कहानी का अवलोकन करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

समूह छायांकन।

सभागार में उपस्थित गणमान्य।

शिकोहाबाद के संस्कृति भवन में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री उमाशंकर शर्मा ने की। श्रीमती जानकीदेवी बजाज के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों पर गोष्ठी में प्रकाश डाला गया। लघु फिल्म के द्वारा जानकीदेवी का जीवन वृत्त प्रस्तुत किया गया जिसे श्रोताओं ने करतल ध्वनि से सराहा। इसी कार्यक्रम में श्रीमती किरण बजाज का काव्यमय संदेश पढ़ा गया तथा गीतिका बजाज की कविता का वाचन किया गया। श्रोताओं ने दोनों संदेशों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

वक्ताओं में श्री मंज़र–उल वासै ने जानकीदेवीजी के स्वदेशी प्रेम और खादी प्रेम पर प्रकाश डाला, वहीं श्री अरविन्द तिवारी ने महिला सशक्तिकरण के सम्बन्ध में किए गए उनके ठोस कार्यों की चर्चा की। डॉ. महेश आलोक ने उनकी स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका पर विस्तृत प्रकाश डाला, जबकि डॉ. चन्द्रवीर जैन ने उनके कूपदान और उसमें आने वाली बाधाओं के समाधान के प्रयासों का जिक्र किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री उमाशंकर शर्मा ने बताया कि बजाज परिवार भारतीय समाज को इकाई मानता था न कि व्यक्ति विशेष को। अतः जानकीदेवीजी के कार्यों से पूरा भारतीय समाज ही प्रेरित होता है।

इस अवसर पर शहर के गणमान्य व्यक्ति, पत्रकार आदि बड़ी तादाद में उपस्थित थे। उपस्थित लोगों ने लघु चित्र प्रदर्शनी में विशेष रुचि दिखायी।

जानकी देवी का त्याग महान
छोड़ी रेशम और गहनों की शान
खादी में थी उनकी जान
हजारों कुओं का करवाया दान
स्वदेशी का था उनको अभिमान
गौमाता का किया सम्मान
सत्य, अंहिसा, प्रेम की खान
हम करते उनको कोटि-कोटि
प्रणाम।

गीतिका बजाज

2018

मुंबई:

जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयन्ती

- **कार्यक्रमः** जानकीदेवी बजाज 125वीं जयंती समारोह
- **दिनांकः** 8 जनवरी 2018 • **मुख्य अतिथिः** श्रीमती किरण बजाज • **विशिष्ट आमंत्रितः** श्रीमती सुदीप्ता व्यास
- **स्थान :** जानकीदेवी बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई

एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की मैनजमेंट शाखा 'जानकीदेवी बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज' में जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयंती पर किरण बजाज को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया। विश्वविद्यालय की वाइस–चांसलर डॉ. शशिकला वंजारी एवं डायरेक्टर डॉ. मीरा शंकर ने श्रीमती बजाज का अभिवादन कर, जानकीदेवी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित करवायी।

समारोह का प्रारंभ छात्रों की सशक्त व्यंग्य नाटिका ''लड़कियों को छेड़ना अपराध है'' की प्रस्तुति से हुआ। किरणजी ने जानकीदेवीजी के अंतरंग संस्मरणों को उपस्थित युवाओं व शिक्षकों के साथ साझा किया– समृद्ध पारंपरिक परिवारी की जानकीदेवी ने गांधीवादी परिवार में आकर पहले पर्दा छोड़ा फिर गहने। जब उन्होंने खादी को अपनाया तो विदेशी कपड़ों की होली जलायी, उन्हें बाँटा नहीं। खादी अपनायी थी नहीं, जीवनभर थोड़े भी खाली समय में सूत काता। लक्ष्मीनारायण मंदिर दलितों के लिए खोला ही

श्रीमती जानकीदेवीजी की प्रतिमा को अभिवादन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती किरण बजाज साथ में श्रीमती सुदीप्ता व्यास।

नहीं, रसोई में काम करने के लिए एक दलित को रख लिया। गोसेवा के जरिए तमाम पशुधन के संवर्धन की बात की। स्वतंत्रता आंदोलन में जेल गईं। वह परिवार के हर सदस्य को जेल जाने की तैयारी बताई। बापूजी के बाद उन्होंने विनोबा भावे के भूदान को अपनाया साथही उसमें कूपदान का एक सूझबूझ वाला कार्यक्रम भी जोड़ दिया। माताजी की इस सोच और कर्मठता के पीछे उनकी तीव्र देश भक्ति और भावना तो थी, किन्तु साथही उनकी प्रबन्धन कुशलता (Management skill) का भी बड़ा योग था। उनके कार्य योजनाबद्ध होते थे, लोगों को

सभा को संबोधित करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती किरण बजाज।

सभागार में उपस्थित शिक्षक एवं विद्यार्थी।

साथ लेकर उन्हें सक्रियता की प्रेरणा देती थीं और स्थिति को मापती रहती थीं और उचित सुधार करती थीं। एक तरह से प्रबन्धन (Management) की पूरी प्रक्रिया होती थी। किरणजी के इस विश्लेषण से श्रोता बहुत प्रेरित हुए।

आयोजन का समापन छात्रों द्वारा प्रस्तुत भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुआ जिसमें उनकी तीव्र प्रतिभा झलकती थी। स्टूडेंट काउंसिल के जनरल सैकेटरी ने आभार व्यक्त किया।

जानकीदेवीजी की जीवन कहानी का अवलोकन करती हुयीं डॉ. शशिकला वंजारी, डॉ. मीरा शंकर, श्रीमती किरण बजाज एवं श्रीमती सुदीप्ता व्यास।

विद्यार्थियों द्वारा नृत्य का प्रस्तुतीकरण।

छात्रों द्वारा प्रस्तुत व्यंग्य नाटिका 'लड़कियों को छेड़ना अपराध है' का एक दृश्य।

समूह छायांकन।

मुंबई:

25वाँ आई.एम.सी.-लेडीज विंग जानकीदेवी बजाज पुरस्कार-2017

- **कार्यक्रम:** 25वाँ आई.एम.सी. लेडीज विंग जानकीदेवी बजाज पुरस्कार–2017
- **दिनांक** : 9 जनवरी 2018 • **मुख्य अतिथि** : सुश्री विनीता बाली • **पुरस्कार विजेता** : श्रीमती शमशाद बेगम।
- **स्थान** : वालचन्द, हीराचंन्द हॉल, आई.एम.सी. मुम्बई।

जानकीदेवी की स्मृति में स्थापित प्रतिष्ठित आई.एम.सी. लेडीज़ विंग जानकीदेवी बजाज पुरस्कार को जानकीदेवीजी की 125वीं जयंती तथा पुरस्कार की रजत जयंती पर विशिष्ट समारोह में दिया गया। इस वर्ष यह पुरस्कार गुंडरदेही छत्तीस गढ़ स्थित 'सहयोगी जनकल्याण समिति' की संस्थापक श्रीमती शमशाद बेगम को ग्रामीण उद्यमशीलता में विशिष्ट योगदान के लिए दिया गया। अपने क्षेत्र में महिला साक्षरता की अभूतपूर्व सफलता हासिल करने के बाद शमशाद बेगम ने अन्य कार्यों को अपनाया ताकि महिलाएँ आर्थिक रूप से समर्थ हो सकें–जैसे लघु व्यवसाय चलाना, मुर्गी पालन आदि। 2006 में उन्होंने 'महिला कमाण्डोज़ ब्रिगेड' स्थापित किया, जिसे आगे चलकर छत्तीसगढ़ पुलिस ने 'सुपर पुलिस कमाण्डोज़' के रूप में वर्गीकृत किया। ये अनियंत्रित अपराध, नशाखोरी तथा अवैध शराब के व्यापार–जिससे महिलाओं के शोषण को बढावा मिलता है– पर अंकुश लाने के

पुरस्कार विजेता श्रीमती शमशाद बेगम के साथ श्रीमती किरण बजाज एवं मीनल बजाज।

आई.एम.सी. लेड़िज विंग जानकदेवी बजाज पुरस्कार से श्रीमती शमशाद बेगम को पुरस्कृत करतीं सुश्री विनीता बाली साथ में पुरस्कार समिति की अध्यक्ष श्रीमती नयनतारा जैन एवं चयन समिति के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी।

लिए पुलिस के साथ काम करते हैं। बाल विवाह, दहेज प्रथा अन्य सामाजिक बुराइयों से लड़ने की प्रेरणा देने में भी उन्होंने सार्थक भूमिका निभायी है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज की पूर्व एमडी व सीईओ विनीता बाली थीं।

समारोह का प्रारंभ 'ग्रामीण भारत की कल्पना' विषय पर एक विचार गोष्ठी से हुआ। इस गोष्ठी में श्री अमित चंद्रा (एमडी – बैन केपिटल), श्री अंशू गुप्ता (संस्थापक–'गूँज') मुंबई की पूर्व मेयर एडवोकेट निर्मला सामंत प्रभावलकर, श्री प्रदीपशाह (अध्यक्ष, इंडेशिया फंड एडवाइजर प्रा. लि.) तथा पुरस्कृत श्रीमती शमशाद बेगम ने भाग लिया। गोष्ठी में ग्रामीण उद्यमशीलता से जुड़े मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई। गोष्ठी का कुशल संचालन महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष पूर्णिमा अडवाणी ने किया। इस पुरस्कार की स्थापना श्रीमती किरण बजाज ने 25 वर्ष पूर्व की थी जब वह लेडीज़ विंग की अध्यक्ष थीं। जानकीदेवी बजाज के जीवन कार्य पर आधारित ऑडियो विजुअल के अलावा लघु चित्र प्रदर्शनी को अतिथियों ने बहुत सराहा।

'ग्रामीण भारत की कल्पना' विचार गोष्ठी का दृश्य।

जानकीदेवी बजाज : जीवन परिचय

जानकीदेवी का जन्म जावरा (म. प्र.) के एक धनाढ्य मारवाड़ी वैष्णव परिवार में 7 जनवरी 1893 को हुआ था। वे नियमित रूप से पूजा करतीं और मंदिर जाया करती थीं।

उस समय की समसामयिक सामाजिक परम्पराओं के कारण उनको घर पर ही पढ़ाने की व्यवस्था कर दी। साढ़े 8 वर्ष की आयु में उनका विवाह वर्धा मध्यप्रदेश में जमनालालजी बजाज के साथ हो गया तथा वे बजाज परिवार में गृह लक्ष्मी बनकर 1902 में अपने ससुराल वर्धा (महाराष्ट्र) आ गईं।

जानकीदेवी के सबसे बड़े प्रेरणा स्रोत उनके पति थे। जमनालालजी एक धनाढ्य व्यवसायी, महात्मा गांधी के अनुयायी, समाज सुधारक, महान देशभक्त और गो भक्त थे। उन्होंने अपनी पत्नी को सामान्य ज्ञान की शिक्षा एवं समसामयिक घटनाओं की जानकारी देने के लिए एक पारसी महिला को उन्हें अखबार पढ़ कर सुनाने के लिए नियुक्त कर दिया। अपने प्रारम्भिक वैवाहिक जीवन में वे सोना–चाँदी ही नहीं वरन् मोती–हीरों से सजी–धजी रहती थीं। उन्होंने तीन पुत्रियों– कमला, मदालसा और उमा और दो पुत्रों – कमलनयन और रामकृष्ण को जन्म दिया ।

घूँघट निष्कासन: 1919 में जमनालालजी ने उन्हें परदा छोड़ने का गांधीजी का निर्देश सुनाया और उन्होंने तत्काल इसका पालन किया।

संपूर्ण आभूषणों का त्याग: 1921 में 28 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने सारे स्वर्ण, रजत, हीरे आदि आभूषण त्याग कर देश को अर्पण किए।

विदेशी कपड़ों की होली: विदेशी कपड़ों को भी त्याग दिया। उनके विदेशी वस्त्र, जिनमें उनके घर के, दुकान और मंदिर के वस्त्र सम्मिलित थे, सात दिन तक वर्धा के चौक पर आग में जलाये जाते रहे। उस समय जानकीदेवी को समाज का विरोध और बहिष्कार भी सहन करना पड़ा।

खादीमय जीवन: उन्होंने स्वयं ही खादी पहनी और स्वयं ही चरखा चलाया, अनेकानेक महिलाओं को भी इसके लिए प्रेरित किया एवम् घर–घर जाकर चरखा चलाना सिखाया। तब से पूरा कुटुम्ब खादीमय हो गया।

हरिजनों को मंदिर प्रवेश: बजाज परिवार द्वारा वर्धा में बनाये गये लक्ष्मीनारायण मंदिर में विनोबाजी के नेतृत्व में 17 जुलाई 1928 को हरिजन प्रवेश कराया गया।

भूदान–कूपदान–में योग: उन्होंने भूदान आंदोलन के दौरान ग्रामीण भारत के लोगों की मदद के लिए अपने आध्यात्मिक गुरू विनोबाजी के साथ विषम परिस्थितियों के चलते भी सैकड़ों मील की पदयात्रा की, इन्होंने बिनोबाजी के साथ मिलकर भूदान, कूपदान, गोसेवा तथा ग्राम सेवा के क्षेत्र में अनवरत कार्य किया।

ओजस्वी वक्ता: स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान बड़ी–बड़ी मीटिंगों को निर्भय होकर श्रोताओं के अनुसार मराठी, गुजराती, मारवाड़ी और हिन्दी भाषाओं में सम्बोधित भी किया।

निष्काम राष्ट्र सेवा: निष्काम राष्ट्र सेवा उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। उन्होंने अपनी संतानों को स्वतंत्रता आन्दोलन के यज्ञ में लगा दिया। घर में भी हरिजन को रसोई में स्थान दिया गया।

स्वयं जानकीदेवी भी जेल गयीं, उन्हें पुलिस की यातनाओं को भी सहन करना पड़ा।

भारत सरकार ने त्याग, समर्पण और देश भक्ति के

लिए 1956 में उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया और देश के तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

गोसेवा: अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने विनोबाजी द्वारा प्रारंभ किये गए गो–हत्या के विरुद्ध आंदोलन में भी पूर्ण सक्रियता के साथ भाग लिया। वह आजीवन अखिल भारतीय गो सेवा संघ की अध्यक्ष रहीं।

दिनांक 21 मई 1979 को इस राष्ट्रभक्त, गोभक्त, समाजसुधारक और सादगी की मूर्ति महिला का वर्धा में देहान्त हो गया।

श्रीमती जानकीदेवी बजाज।

पति श्री जमनालाल बजाज के साथ।

महात्मा गांधी के साथ प्रातः भ्रमण।

तकली पर सूत कातते हुए।

विनोबाजी के साथ भूदान हेतु पद–यात्रा

सभा को सम्बोधति करतीं श्रीमती जानकीदेवी बजाज।

श्रीमती इंदिरा गांधी से अभिनंदन ग्रंथ ग्रहण करते हुए

राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा 'पद्मविभूषण से सम्मानित'

जानकीदेवीजी की १२५वीं जयंती पर अन्य कार्यक्रम

देशभर में बजाज इलेक्ट्रिकल्स की 25 शाखाओं, जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्था–वर्धा, औरंगाबाद, कासी–का–बास, पुणे तथा जानकीदेवी बजाज ग्राम सेवा संस्था – वर्धा में भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये।

जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्था पुणे (महाराष्ट्र)।

जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्था वर्धा (महाराष्ट्र)।

जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्था औरंगाबाद (महाराष्ट्र)।

बजाज इलेक्ट्रीकल्स लि. मुम्बई, (महाराष्ट्र)।

जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्था कासी का वास (राजस्थान)।

'होली में क्या करें, क्या ना करें' विचार गोष्ठी

- **कार्यक्रम विषय** : 'होली में क्या करें, क्या ना करें' विचार गोष्ठी
- **दिनांक** : 6 मार्च 2017 • **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

शब्दम् संस्था द्वारा 'होली में क्या करें, क्या न करें' विचार गोष्ठी का आयोजन किया। इसका उद्देश्य यह देखना था कि किस प्रकार आज होली को रासायनिक रंगों, अश्लील होली गायन, हरे पेड़ों का कटाव, नशे में झूमता युवा वर्ग और चारों तरफ व्यर्थ पानी ने अपनी जद में ले लिया है। जबकि होली मिलन और सौहार्द का त्योहार है।

मीटिंग में उपस्थित सभी लोगों ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हम स्वयं तो प्राकृतिक रंग का प्रयोग करेंगे ही साथ ही लोगों को प्राकृतिक रंगो का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे।

इस अवसर पर शब्दम् महिला समिति ने प्राकृतिक रंगो को बनाने की विधि का लाइव डेमो दिया।

'होली में क्या करें, क्या न करें' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी का दृश्य।

'राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट'

- **कार्यक्रम** : रामनवमी' शोभायात्रा'
- **दिनांक** : 4 अप्रैल 2017 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

रामनवमी के अवसर पर शब्दम् ने हिन्द लैम्प्स परिसर में श्री सिद्धेश्वरनाथ मन्दिर से राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न की आरती कर, शोभायात्रा निकाली।

पूजा अर्चना करते भक्तगण।

मंगल गीतों के साथ शोभायात्रा।

समूह छायांकन।

कुँवर नारायण को याद करते हुए

– डॉ. महेश आलोक

कुँवर नारायण (19 सितंबर 1927–15 नवम्बर 2017) नई कविता आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर एवं समकालीन हिन्दी कविता के पुरोधा कवि हैं। वे अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरा सप्तक (1959) के प्रमुख कवियों में रहे हैं। यद्यपि कुँवर नारायण की मूल विधा कविता रही है पर इसके अलावा उन्होंने कहानी, लेख व समीक्षाओं के साथ–साथ सिनेमा, रंगमंच एवं अन्य कलाओं पर भी बखूबी लेखनी चलाई है। इसके चलते जहाँ उनके लेखन में सहज संप्रेषणीयता आई वहीं वे प्रयोगधर्मी भी बने रहे। उनकी कविताओं –कहानियों का कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। 'तनाव' पत्रिका के लिए उन्होंने कवाफी तथा ब्रोर्खेस की कविताओं का भी अनुवाद किया है। कुँवर नारायण को वर्ष 2005 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ज्ञानपीठ के अलावा कुँवर नारायण को साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान, कुमार आशान पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, राष्ट्रीय कबीर सम्मान, शलाका सम्मान, मेडल ऑफ वॉरसा यूनिवर्सिटी, पोलैंड और रोम के अन्तरराष्ट्रीय प्रीमियो फेरेनिया सम्मान और 2009 में पद्‌मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया।

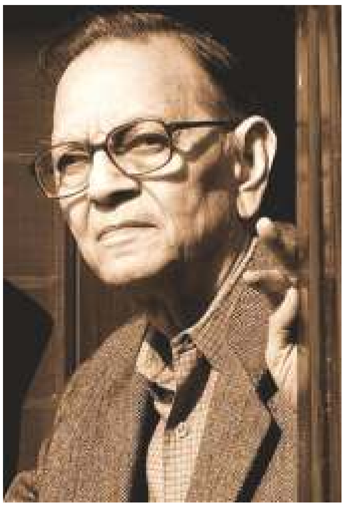

कुंवर नारायण उन यशस्वी कवियों में हैं, जिनकी कविता में मिथक और इतिहास, परंपरा और आधुनिकता, पूर्व और पश्चिम की काव्यात्मक परंपरा, कलात्मक औदात्य, बौद्धिक सघनता, वैचारिक ईमानदारी, काव्यात्मक नैतिकता, संवेदनात्मक गहनता, मितव्ययिता और प्रतिरोधात्मक साहस का मेल पिछली शताब्दी के मध्य से लेकर इक्कीसवीं सदी के डेढ़ दशक बाद भी बना हुआ है। काव्य–परंपरा की इतनी उज्ज्वलता और समृद्धि कम कवियों में है। उन्होंने कविता की ऊंचाई की जो लकीर अपने लिए खींची उसे लगातार बनाए रख कर काव्य–सर्जना की। यह किसी उपलब्धि से कम नहीं है। वे आधुनिक हिंदी काव्य–परंपरा के क्लासिक मॉडल के भीतर अपनी जगह बनाते हैं।

मुझे याद है जब मैं जे0एन0यू0 में रहते हुए पहली बार उनसे मिला था तो लगा ही नहीं कि समकालीन भारतीय कविता के इतने बड़े कवि से मिल रहा हूँ। वे देर तक उस बीच में प्रकाशित मेरी कविताओं पर बात करते रहे। मुझे जानकर आश्चर्य हुआ कि वे नए कवियों को उतनी ही उत्सुकता से पढ़ते हैं जितना अपने समकालीनों को। उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि तुम्हें बहुत जल्दी केदारनाथ सिंह के दबाव से बाहर निकल आना चाहिए और वह माद्दा तुममें है। तुम्हारी इधर की कविताओं में यह छटपटाहट साफ दिखायी पड़ती है।

कविता उनके लिए एक संवेदनशील और मेधावी मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति का गहन पारदर्शी माध्यम है। जाहिर है यहां यह बात साफ होनी चाहिए कि कुँवर नारायण छायावादियों की आत्माभिव्यक्ति से कहां और किस बिंदु पर अलग होते हैं। कुँवर नारायण के अनुसार 'कविता मेरे लिए कोई भावुकता की हाय–हाय न होकर यथार्थ के प्रति एक प्रौढ़ प्रतिक्रिया की मार्मिक अभिव्यक्ति है'– तो

बातें साफ हो जाती हैं, लेकिन फिर भी आलोचकीय दृष्टि की मांग बनी रहती है।उनकी कविता में निरी समकालीनता और सामाजिकता की अविचारित वाचालता, चमक–दमक या आतंक नहीं है। वह मनुष्य की आत्मा, मनुष्य और प्रकृति, मनुष्य और अज्ञात सत्ता, मनुष्य और समाज, मनुष्य और इतिहास– यानी प्रकट–अप्रकट सभी तरह के संबंधों और सच्चाइयों की पड़ताल में प्रवृत्त होती है। उनके यहाँ कविता व्यापक अर्थ में 'जीवन की आलोचना' है।युवा आलोचक पंकज चतुर्वेदी के अनुसार कुँवर नारायण की कविता में अंतर्जगत और बहिर्जगत या व्यक्ति और समाज के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं है, बल्कि दोनों के मध्य एक निरंतर विकसनशील द्वंद्वात्मक संबंध है, जिसे वे अपनी कविता में उपस्थित करते हैं। उनकी कविता में बहुस्तरीयता है। यह मानने में शायद पाठकों को कठिनाई होगी कि कुँवर नारायण का शिल्प सुबोध और सरल है। दरअसल, उनकी कविता अर्थ के संश्लेष को प्रकट करती है। वह अपनी बुनावट में बेहद जटिल और बौद्धिक है। भाषा की स्पष्टता, अर्थ की स्पष्टता नहीं है।

शुरुआती दौर की उनकी कविताएं काफी हद तक अंतर्मुखी हैं। बीसवीं सदी के अंत तक आते–आते उनकी कविताओं में खुलापन दिखने लगा। यथार्थ ज्यादा सघन और जटिल हुआ। सामाजिक–राजनीतिक अन्याय के प्रति कविता मुखर होने लगी। 'आत्मजयी' में जो व्यक्ति चीजों के प्रति जिज्ञासु है, वह अब प्रतिकार की मुद्रा अपनाने लगा। यह कविता का ऐतिहासिक विकास है और लेखक की समकालीनता के भीतर पैठ। समाज के भीतर अन्वेषक दृष्टि को टिकाए रखने की निरंतरता भी। यही वजह है कि कुँवर नारायण नवोदित लेखकों के बीच 'आउटडेटेड' या 'ओल्ड फैशन' के कवि नहीं हैं।

वे समय के साथ लगातार मुठभेड़ करते और अपने शिल्प और वस्तु सौंदर्य में लगातार बदलाव करने वाले कवि रहे हैं। वे सम्पूर्ण मनुष्य और उसकी मनुष्यता तथा उसके आत्यन्तिक सत्य की तलाश के कवि हैं। मनुष्यता का उदात्त पक्ष उनकी कविताओं की आधार भूमि रहा है।वे मानते थे कि कविता वक्तव्य नहीं गवाह है। उनकी कविताओं में जिज्ञासा और प्रश्नाकुलता बहुत है और यही संवेदनात्मक और ज्ञानात्मक भावबोध उन्हें भारतीय कविता का बड़ा कवि बनाता है।

एक बड़े और अत्यन्त जरुरी कवि के आकस्मिक निधन पर हम शब्दम् परिवार की तरफ से उन्हें नमन करते हैं।

– डॉ. महेश आलोक

प्रकाशित कृतियाँ–कविता संग्रह – चक्रव्यूह (1956), तीसरा सप्तक (1959), परिवेश हम–तुम (1961), अपने सामने (1979), कोई दूसरा नहीं (1993), इन दिनों (2002)।

खंड काव्य – आत्मजयी (1965) और वाजश्रवा के बहाने (2008)।

कहानी संग्रह – आकारों के आसपास (1973)।

समीक्षा विचार – आज और आज से पहले(1998), मेरे साक्षात्कार (1999), साहित्य के कुछ अन्तर्विषयक संदर्भ (2003)।

संकलन – कुंवर नारायण–संसार (चुने हुए लेखों का संग्रह) 2002 ,कुँवर नारायण उपस्थिति (चुने हुए लेखों का संग्रह) (2002), कुँवर नारायण–चुनी हुई कविताएँ (2007), कुँवर नारायण– प्रतिनिधि कविताएँ (2008)

कुँवर नारायण की तीन कविताएं

प्रियजन

मैं बहुत जल्दी में लिख रहा हूं
क्योंकि मैं बहुत जल्दी में हूं लिखने की
जिसे आप भी अगर
समझने की उतनी ही बड़ी जल्दी में नहीं हैं
तो जल्दी समझ नहीं पायेंगे
कि मैं क्यों जल्दी में हूं।

जल्दी का जमाना है
सब जल्दी में हैं
कोई कहीं पहुंचने की जल्दी में
तो कोई कहीं लौटने की ३

हर बड़ी जल्दी को
और बड़ी जल्दी में बदलने की
लाखों जल्दबाज मशीनों का
हम रोज आविष्कार कर रहे हैं
ताकि दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हुई
हमारी जल्दियां हमें जल्दी से जल्दी
किसी ऐसी जगह पर पहुंचा दें
जहां हम हर घड़ी
जल्दी से जल्दी पहुंचने की जल्दी में हैं।

मगर............कहाँ ?
यह सवाल हमें चौंकाता है
यह अचानक सवाल इस जल्दी के जमाने में
हमें पुराने जमाने की याद दिलाता है।

किसी जल्दबाज आदमी की सोचिए
जब वह बहुत तेजी से चला जा रहा हो
-एक व्यापार की तरह-
उसे बीच में ही रोक कर पूछिए,
'क्या होगा अगर तुम
रोक दिये गये इसी तरह
बीच ही में एक दिन
अचानक.?'

वह रुकना नहीं चाहेगा
इस अचानक बाधा पर उसकी झुंझलाहट
आपको चकित कर देगी।
उसे जब भी धैर्य से सोचने पर बाध्य किया जायेगा
वह अधैर्य से बड़बड़ायेगा।

'अचानक' को 'जल्दी' का दुश्मान मान
रोके जाने से घबड़ायेगा। यद्यपि आपको आश्चर्य होगा
कि इस तरह रोके जाने के खिलाफ
उसके पास कोई तैयारी नहीं.

कविता

कविता वक्तव्य नहीं गवाह है
कभी हमारे सामने
कभी हमसे पहले
कभी हमारे बाद

कोई चाहे भी तो रोक नहीं सकता
भाषा में उसका बयान
जिसका पूरा मतलब है सचाई
जिसकी पूरी कोशिश है बेहतर इन्सान

उसे कोई हड़बड़ी नहीं
कि वह इश्तहारों की तरह चिपके
जुलूसों की तरह निकले
नारों की तरह लगे
और चुनावों की तरह जीते

वह आदमी की भाषा में
कहीं किसी तरह जिन्दा रहे, बस

•••

मुश्किल

एक अजीब सी मुश्किल में हूं इन दिनों-
मेरी भरपूर नफरत कर सकने की ताकत
दिनों-दिन क्षीण पड़ती जा रही,

मुसलमानों से नफरत करने चलता
तो सामने गालिब आकर खड़े हो जाते
अब आप ही बताइए किसी की कुछ चलती है
उनके सामने?

अंग्रेजों से नफरत करना चाहता
जिन्होंने दो सदी हम पर राज किया
तो शेक्सपियर आड़े आ जाते
जिनके मुझ पर न जाने कितने अहसान हैं

और वह प्रेमिका
जिससे मुझे पहला धोखा हुआ था
मिल जाए तो उसका खून कर दूं!
मिलती भी है, मगर
कभी मित्र, कभी मां, कभी बहन की तरह
तो प्यार का घूंट पीकर रह जाता ....

पुस्तक चर्चा

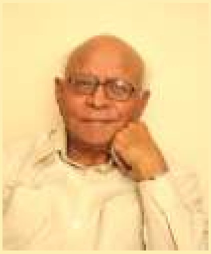

शब्दम् उपाध्यक्ष प्रो. नंदलाल पाठक की पुस्तक 'गजलों ने लिखा मुझको' की गजलों में समकालीन जीवन की त्रासदियां दर्ज हैं, तो राजनीति की आवारा बयानबाजियां भी मौजूद हैं। नगण्यता का गुणगान है तो श्रम का बखन भी है। इसलिए यह गजल संग्रह देर तक अपने पाठकों को सम्मोहित करता रहेगा।

खास किताब

समर में सारथी होना!

सम्मान

डॉ. अजय कुमार आहूजा

27 नवम्बर 2017 को बैंकॉक, थाईलेंड में एनआरआई वैलफेयर सोसाइटी द्वारा शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान के लिए सेशल्स के एम्बेसड़र माननीय फिलिप ली गैल के द्वारा महात्मा गांधी सम्मान से सम्मानित किया।

सम्मान

शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री मंज़र–उल वासै जी को इस वर्ष निम्न सम्मान प्राप्त हुए।

- सत्यसाई संस्था शिकोहाबाद द्वारा सम्मान
- सरस्वती साधना परिषद मैनपुरी द्वारा सम्मान
- 'जैन मिलन' संस्था द्वारा समाजसेवी सम्मान
- दिल्ली संस्कृत संस्थान द्वारा (गीता पद्य अनुवाद) सम्मान
- Ivey International द्वारा समाजसेवी सम्मान

श्रद्धांजली

शब्दम् सलाहकार मण्डल के वरिष्ठ सदस्य बालकृष्ण गुप्त (फिरोजाबाद) के निधन पर समस्त 'शब्दम्–परिवार' उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

आपके सहयोग के लिए शब्दम् संस्था आपका आभार व्यक्त करती है।

संचित दान : कोनार्क हरबल एवं हेल्थ केयर, कोनार्क फिक्चर लि., कोनार्क प्रोडेक्ट, श्री दीपक पोद्दार, श्री शेखर बजाज

सामान्य दान : नामश्री अमित कुमार, श्री अमित मलिक, श्री अमितेश कुमार, श्री हेमराज गिरी, श्री मन्जीत सिंह, श्री मनपाल सरीन, श्री नवीन भाटिया, श्री प्रवीन कुमार, श्री प्रनोती रागे, श्री प्रवीन फोगाट, श्री प्रवीन पांचाल, श्री प्रिंस केसरी, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री रवि कुमार, श्री रिषभ भारद्वाज, सुश्री सुगन्धा, श्री विक्रान्त लखपल, श्री अनुराग सिंह, श्री नारायण रेड्डी, श्री संजय द्त्ता, श्री राजेश शर्मा, श्री पंकज झा, श्री साकेत मिश्रा, श्री अमित सिंघल, श्री दीपक भटनागर, श्री क्षितिज बक्सी, श्री आदित्य शर्मा, श्री विनीत शर्मा, श्री उदित मेहरोत्रा, श्री धर्मेन्द्र राठौर, श्री विकास सिंह, श्री मिर्जा आजम बेग, श्री शहजाद अहमद, श्री गुलशन जैन, श्री राहुल कुमार, श्री अंकुर शर्मा, श्री अंकुर पाण्डेय, श्री मनमोहन सिंह, श्री सुमित सैनी, श्री साहिब मदान, श्री संदेश अग्रवाल, श्री अम्बर नाग

शब्दम् को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अंतर्गत छूट योग्य है।

वो जो......

स्वराज के खातिर सहर्ष बहुमूल्य गहने त्यागे,
विदेशी वस्त्रों की होली जलाए
वो जो सिर्फ और सिर्फ खादी अपनाए, घर–घर जाकर चरखा सिखाए
वो जो अपना घर स्वतंत्रता आंदोलन का गढ बनाए, अपनी बहु बेटी
तक को सत्याग्रह आंदोलन में लगाए
वो जो दहेज प्रथा को अंगूठा दिखाए, घूंघट को जड़ से मिटाए
वो जो लक्ष्मीनारायण मंदिर के पट दलित–अछूतों के लिए खुलवाये
वो जो मूक प्राणी की सेवा में तन–मन–धन घोले
वो जो द्वार–द्वार पर जाए कूप दान का महत्व बताए
वो जो सबको गले लगाए, पर मुह माया से भागे
वो जो गीता का दर्शन अपनाए, करे निष्काम कर्म और फल को त्यागे
वो जो पति के उच्च आदर्श, गांधीजी का सत्याग्रह और विनोबा
का ज्ञान अपनाए जो सब कुछ होकर, सब कुछ त्यागे
वो है, वो है जानकीदेवी बजाज।

– किरण बजाज
जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयंती के अवसरपर